# साप्ताहिक भविष्य

२ अगस्त से ८ अगस्त १६७६ तक
पं० कुलदीप शर्मा ज्योतिषी
सुपुत्र दैवज्ञ भूषण पं० हंसराज शर्मा

**मेष :** यह सप्ताह संघर्षमय होने पर भी दिलचस्प रहेगा, परिश्रम करने पर भाग्य आपका साथ देगा और कामों में सफलता मिलती रहेगी, नई योजना पर व्यय करेंगे, समस्याएं बढ़ेंगी, व्यय बढ़ेगा।

**वृष :** इस सप्ताह शुभ अशुभ मिश्रितफल मिलेंगे, सफलता प्राप्ति के लिए बार बार प्रयास करना पड़ेगा, निराशा और उदासीनता का सामना, कारोबार यथापूर्व, लाभ अच्छा होता रहेगा, यात्रा न करें।

**मिथुन :** विगत सप्ताह की तुलना में इस सप्ताह को अच्छा कहा जा सकता है, आर्थिक दृष्टि से सप्ताह के अन्तिम दिन अधिक लाभप्रद रहेंगे, स्थाई काम धन्धों में उन्नति, लाभ बढ़ेगा, ऋण से मुक्ति मिलेगी।

**कर्क :** व्यर्थ के कामों में समय खराब, व्यय बढ़ेगा, यात्रा छोड़ दें, अन्य दिनों में व्यापारिक और आर्थिक दृष्टि से सप्ताह आपके लिए लाभप्रद रहेगा, कामकाज में उन्नति होती महसूस होगी आय में वृद्धि।

**सिंह :** काफी परेशानी एवं निराशा का सामना, संघर्ष करने पर भी काम न बन सकेंगे, घरेलू वातावरण भी उलझा सा रहेगा, अन्य दिनों में यात्रा सफल रहेगी, कुछ जरूरी काम बन जायेंगे।

**कन्या :** यह सप्ताह मिश्रित फलों वाला है। व्यापार से यथार्थ लाभ, सहयोगी अंगसंग रहेंगे, आर्थिक स्थिति अनुकूल रहेगी, परिवार से सुख, यात्रा सफल परन्तु दिन ठीक नहीं, स्वभाव में गुस्सा।

**तुला :** सप्ताह-दिलचस्प भी है और संघर्षमय भी, परिश्रम काफी करना पड़ेगा, मनोरंजन आदि पर व्यय होगा, धर्म-कर्म में रुचि, किसी नई योजना पर विचार, रोग-शत्रु एवं रुकावटों पर विजय पाएंगे।

**वृश्चिक :** व्यर्थ के कामों पर व्यय, सेहत को संभाले रखें, हानि का भय है, वैसे यह सप्ताह पहले से काफी अच्छा है और कुछ विशेष कामों में सफलता भी मिलती रहेगी, दौड़ धूप काफी रहेगी, कारोबार में सुधार।

**धनु :** पिछले सप्ताह की अपेक्षा यह सप्ताह अच्छा रहेगा, वैसे सप्ताह के अन्तिम दिन अधिक लाभप्रद रहेंगे, व्यय यथार्थ, आर्थिक क्षेत्र में विकास होने लगेगा और व्यापार की दशा भी सुधरेगी, यात्रा न करें।

**मकर :** कारोबार सुधरेगा, भाग्य आपका साथ देगा और प्रयास करने पर सफलता भी मिलती रहेगी, परिवार से सुख-सहयोग, हालात पहले से ठीक चलेंगे, आर्थिक लाभ बढ़ेगा, किसी बने काम में बिगाड़ होगा।

**कुम्भ :** यह सप्ताह आपके लिए अच्छा भी है और कुछ संघर्षमय भी, आर्थिक क्षेत्र में विकास होगा और लाभ के साधन भी बनते रहेंगे, नातेदारों से कुछ परेशानी, किसी काम में रुकावट परिश्रम करने से सफलता मिलेगी।

**मीन :** दिन ठीक नहीं, सेहत बिगड़ेगी, काम समय पर न बन सकेंगे, अन्य दिनों में शुभ-अशुभ मिले-जुले फल मिलते रहेंगे, यात्रा सफल परन्तु सावधानी से करें, कारोबारी हालात प्राय: ठीक चलेंगे।

# आपके पत्र

दीवाना का नया अंक २४ मिला। मुखपृष्ठ पर चिल्ली की उल्टी परछाई देख कर बहुत हँसी आई। दीवाना को अत्यन्त रोचक बनाने में मुखपृष्ठ का भी बहुत योगदान रहता है। इस बार के 'सिलबिल-पिलपिल' एवं 'मोटू-पतलू' विशेष रूप से रोचक रहे। जूडो-कैराटे कैसे सीखें लेखमाला बहुत ही ज्ञानवर्धक है। 'गरीब चन्द की डाक' तो बहुत ही मजेदार थी।

**निशीथ चन्द्र—रुड़की**

दीवाना का नया अंक मिला। पढ़कर खुशी हुई। पंचतंत्र (पैसा), पैरोडी, जानी दुश्मन, मोटू पतलू, सवाल यह है? बिन्दिया गोस्वामी आदि पढ़कर खुशी हुई। नये धारावाहिक उपन्यास 'ठोकर' (लेखिका संगीता) का जवाब नहीं। चाचा चौधरी फिर से शुरू करें।

**सुनील कुमार जैन—भिलाई**

मैं आपकी पत्रिका 'दीवाना' बहुत अरसे से पढ़ता चला आ रहा था लेकिन बीच में दीवाना नहीं मिला। अब मुझे दीवाना आ अंक २४ प्राप्त हुआ। मुखपृष्ठ को देखकर खुशी की लहर दौड़ पड़ी। मोटू-पतलू ने तो कमाल ही कर दिया बाकी सभी स्तम्भ रोचक लगे। क्या आप 'चाचा चौधरी' के १-२ पृष्ठ नहीं दे सकते। यदि फैंटम के पृष्ठ बढ़ा दें तो दीवाना को आठ चांद लग जाएंगे।

**सुरेन्द्र धवन—झाँसी**

मैं काफी समय से दीवाना को पढ़ रहा हूं। आज ही दीवाना का नया अंक २४ मिला पढ़कर बहुत खुशी हुई। आजकल दीवाना बहुत तरक्की कर रहा है आशा है आगे भी ऐसी तरक्की करता रहेगा। पंचतंत्र, काका के कारतूस, फिल्मी कहानी 'जा निर्दोष मन' और परोपकारी बहुत पसंद आया। सिलबिल पिलपिल में 'काला कुत्ता', मोटू पतलू फैंटम और बंद करो बकवास भी अत्यन्त पसंद आया। आशा है अगला दीव. इससे भी बढ़कर रोचक और अच्छा नि लेगा।

**सुरेश कुमार तरानी—गाँधीधाम**

मैं दीवाना २ साल से पढ़ रहा हूं। पर मैं यह देख रहा हूँ कि दिन-ब-दिन दीवाना के लेख बड़े ही मजेदार होते रहे हैं। दीवाना का अंक २४ पढ़ा बहुत ही अच्छा लगा, मोटू पतलू को आप ने रंगीन से सफेद क्यों कर दिया? मैं आप से विनती करता हूँ कि इसे आप फिर से रंगीन बनाइये। अंक २४ का पहला पन्ना चि... साहब तो ऐसे खड़े हैं जैसे आसमान पर '... लैब' हिल रहा हो।

**नन्द लाल मुठरेजा—पानीपत**

दीवाना का अंक २४ पाया।
मुख पृष्ठ ने मन लुभाया॥
फिर मोटू पतलू को रंगहीन पाया।
यह चक्कर समझ में न आया॥
'जा निर्दोष मन' ने रंग जमाया।
इसमें सब कुछ है नया नया॥
पक्षी एलबम को नहीं छपवाया।
परोपकारी को फिर हरवाया॥
अगले अंक का इन्तजार है।
बाकी सब बेकार है॥

**विवेक शंकर शुक्ल—लखनऊ**

दीवाना का अंक २३ मिला, पढ़कर अत्यधिक खुशी हुई, गम में डूबा हुआ था कि छोटे भाई ने मुझे दीवाना लाकर दे ही दिया। अगर नेता फेरी लगाएं तो...पढ़ा और हंसते-हंसते दीवाना हो गया। सभी स्तम्भ अच्छे ही लगे। दीवाना का क्या कहना, गम से अगर कोई चूर हो तो दीवाना उसे दीवाना बना ही दिया...तो फिर दीवाना का क्या कहना।

**रविन्द्र कुमार 'अनिल'—रांची**

## मुख पृष्ठ पर

मार हथौड़ा खूंटी पर
गलत लगे न वार,
आंखें तेरी बन्द पड़ी हैं
किधर रहा है मार।
किधर रहा है मार
पहले मैं बच जाऊं,
ऐसा न हो एक झटके में
बिना मतलब मैं पिस जाऊं॥


अंक २८, २ अगस्त से ८ अगस्त १६७६ तक
वर्ष : १५

सम्पादक: विश्व बन्धु गुप्ता
सहसम्पादिका: मंजुल गुप्ता
उपसम्पादक: कृपा शंकर भारद्वाज
दीवाना तेज साप्ताहिक
८-ब, बहादुरशाह ज़फर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२

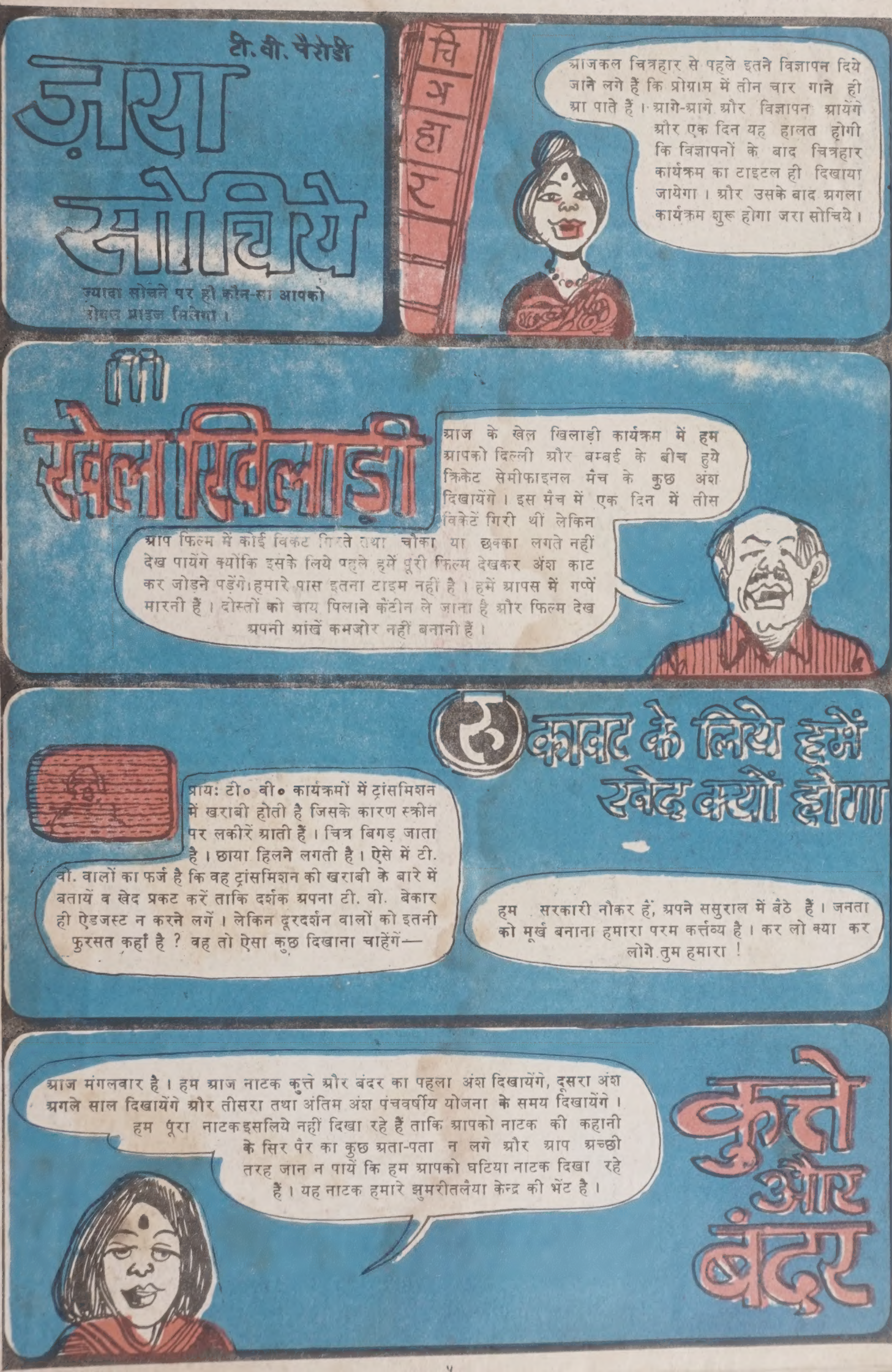
चन्दे की दरें वार्षिक: ४८ रु०
छमाही: २५ रु० द्विवार्षिक: ९५ रु०

# परोपकारी




# बात-बे-बात की




टी. वी. पैरोडी
ज़रा सोचिये
ज़्यादा सोचने पर ही कौन-सा आपको नोबल प्राइज मिलेगा।
चि त्र हा र
आजकल चित्रहार से पहले इतने विज्ञापन दिये जाने लगे हैं कि प्रोग्राम में तीन चार गाने ही आ पाते हैं। आगे-आगे और विज्ञापन आयेंगे और एक दिन यह हालत होगी कि विज्ञापनों के बाद चित्रहार कार्यक्रम का टाइटल ही दिखाया जायेगा। और उसके बाद अगला कार्यक्रम शुरू होगा जरा सोचिये।
खेल खिलाड़ी
आज के खेल खिलाड़ी कार्यक्रम में हम आपको दिल्ली और बम्बई के बीच हुये क्रिकेट सेमीफाइनल मैच के कुछ अंश दिखायेंगे। इस मैच में एक दिन में तीस विकेटें गिरी थीं लेकिन आप फिल्म में कोई विकट गिरते तथा चौका या छक्का लगते नहीं देख पायेंगे क्योंकि इसके लिये पहले हमें पूरी फिल्म देखकर अंश काट कर जोड़ने पड़ेंगे। हमारे पास इतना टाइम नहीं है। हमें आपस में गप्पें मारनी हैं। दोस्तों को चाय पिलाने कैंटीन ले जाना है और फिल्म देख अपनी आंखें कमजोर नहीं बनानी हैं।
रुकावट के लिये हमें खेद क्यों होगा
प्रायः टी० वी० कार्यक्रमों में ट्रांसमिशन में खराबी होती है जिसके कारण स्क्रीन पर लकीरें आती हैं। चित्र बिगड़ जाता है। छाया हिलने लगती है। ऐसे में टी. वी. वालों का फर्ज है कि वह ट्रांसमिशन की खराबी के बारे में बतायें व खेद प्रकट करें ताकि दर्शक अपना टी. वी. बेकार ही ऐडजस्ट न करने लगें। लेकिन दूरदर्शन वालों को इतनी फुरसत कहां है? वह तो ऐसा कुछ दिखाना चाहेंगे—
हम सरकारी नौकर हैं, अपने ससुराल में बैठे हैं। जनता को मूर्ख बनाना हमारा परम कर्त्तव्य है। कर लो क्या कर लोगे तुम हमारा!
आज मंगलवार है। हम आज नाटक कुत्ते और बंदर का पहला अंश दिखायेंगे, दूसरा अंश अगले साल दिखायेंगे और तीसरा तथा अंतिम अंश पंचवर्षीय योजना के समय दिखायेंगे। हम पूरा नाटकइसलिये नहीं दिखा रहे हैं ताकि आपको नाटक की कहानी के सिर पैर का कुछ अता-पता न लगे और आप अच्छी तरह जान न पायें कि हम आपको घटिया नाटक दिखा रहे हैं। यह नाटक हमारे झुमरीतलैया केन्द्र की भेंट है।
कुत्ते और बंदर

# काका के कारतूस

प्रश्न 'दीवाना' के दीवानों के उत्तर काका हाथरसी के



**धाद० के० सुगन्ध, रेवाड़ी**

प्र० : फिल्मों में हिंसा व सैक्स की भरमार कब तक चलती रहेगी ?

उ० : हिट होती हैं आजकल, इसी तरह की फिल्म,
धन बटोरने का यही, सर्वश्रेष्ठ है इल्म ।

**शहजाद अंजुम, पैलेस रोड, टोंक (राज०)**

प्र० : माशूका मेरी, मगर दोस्त उसे उलझाय,
प्रश्न हमारा शीघ्र ही देउ आप सुलझाय ।

उ० : माशूका वो आपकी, छोड़ो यह अभिमान,
पुण्य प्राप्त हो जाएगा, करो दोस्त को दान ।

**एम० एल० राठी, गंगाशहर (राज०)**

प्र० : जनता पार्टी के शासन में जो अराजकता फैल रही है उसका इलाज ?

उ० : फौजी शासन दे सके, गुण्डों को कुछ सीख,
या एमरजेंसी इसे कर सकती है ठीक ।

**ओमप्रकाश 'शाक्य', अबोहर (पंजाब)**

प्र० : चिकनी जमीन पर पैर फिसलता है, तो चिकनी शक्ल पर ?

उ० : चिकनी चुपड़ी सूरत पर, मारे इश्क छलांग,
औंधे मुँह आशिक गिरें, टूटे उसकी टांग ।

**नसरीन मेहताब, राधाकुंड (गोंडा)**

प्र० : रूठे हुए 'रब' को मनाना आसान है, किन्तु रूठे हुए दोस्त को मनाना कठिन क्यों है ?

उ० : दोस्त और दुश्मन सभी 'रब' के लिए समान,
दिलवर के दिल में छिपे बदले के अरमान ।

**उमेश कुमार दोतराजका, चाईबासा (बिहार)**

प्र० : काका जी, मैं भी आपके समान शक्ल और अक्ल कैसे प्राप्त करूं ?

उ० : कविताएं ऐसी लिखो, मिले हास्य भरपूर,
फिर दाढ़ी रख लीजिए, हो जाओ मशहूर ।

**नारायण मूंदड़ा, हरदा (म० प्र०)**

प्र० : ठाकुर जी की पूजा करते समय घंटी क्यों बजाते हैं ?

उ० : सोते अथवा ऊंघते हों शायद भगवान,
घंटी की आवाज सुन, देंय भक्त पर ध्यान ।

**कुलदीप कौर, सेहमी, दमोह (म० प्र०)**

प्र० : कहते हैं सन् ८२ तक यें दुनिया समाप्त हो जाएगी, क्या यह सच है ?

उ० : अभी बहुत दिन पड़े हैं, छोड़ो फिक्र मलाल,
सन् ब्यासी में, खुद-ब-खुद हल हो जाय सवाल ।

**विनोद कुमार राय, सिवान (बिहार)**

प्र० : पुराने लोग घोड़े पर पत्नी को आगे बिठाते थे, अब स्कूटर पर पीछे क्यों बैठाते हैं ?

उ० : पहले जैसा प्रेम अब, नहीं किसी को भाय,
यदि गिर कर मर जाय तो, और नई ले आय ।

**सुरेशचन्द्र अरोड़ा, मेरठ सिटी**

प्र० : काका जी हम आपका निवास स्थान देखना चाहते हैं ?

उ० : चले आइए हाथरस, देखो चित्र-विचित्र,
लेकिन काकी को नहीं दिखा सकेंगे मित्र ।

**नरेन्द्र पाल सिंह, प्रतापगढ़ (उ० प्र०)**

प्र० : प्रश्न पत्रों की जमाखोरी के अपराध में आपको मीसा में बन्द क्यों नहीं किया जाय ?

उ० : मौसी का मीसा किया, मौसा ने कैंसिल्ल,
अब मौसा पछता रहे, शासन है ढिलमिल्ल ।

**विजय कुमार, नेशनल एकाडमी, आसनसोल**

प्र० : लोहे से लोहा कटता है, तो दिल किससे कटता है ?

उ० : जहर-जहर को मारता, लोहा काटत लोह,
दिल को काटे दिलजला, होता तुरत बिछोह ।

**सुरेन्द्र कुमार खजुरी, वाराणसी**

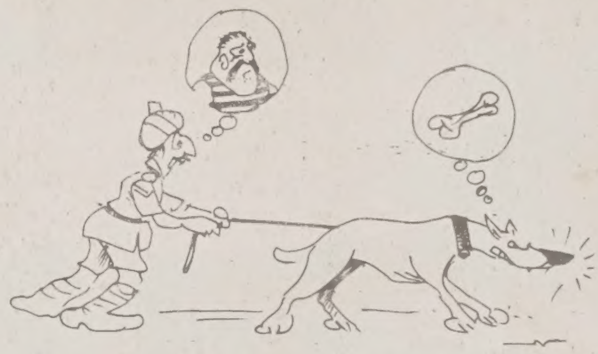
प्र० : इश्क, मोहब्बत और प्यार में क्या फर्क है ?

उ० : प्यार मोहब्बत निकट से, दूरी से हो इश्क,
मम्मी-पापा सूंघ लें, तो बढ़ जाए रिस्क ।

**सतीन्द्र सिंह साहनी, सुभाष नगर (बरेली)**

प्र० : प्रश्नों के उत्तर आप कहाँ से ढूंढ़ कर लाते हैं ?

उ० : प्रश्न आपके कार्ड पर, काका को दिख जाय,
टपके उत्तर पैन से, कागज पर लिख जाय ।



**लालाराम फूटरा, अहिल्या पल्टन, इन्दौर**

प्र० : सोते समय किसी-किसी औरत का मुँह फटा हुआ क्यों रहता है ?

उ० : मुंह का फाटक खोल कर सोतीं मिस इकबाल,
मम्मी उसमें प्यार से, रसगुल्ला दें डाल ।

**चन्द्रभान अनाड़ी, जबलपुर**

प्र० : मैं आपका शिष्य बनना चाहता हूं । गुरु दीक्षा देंगे क्या ?

उ० : रिस्क बहुत है आजकल, करिए हमको माफ ।
चेला गुरु को मूंड कर, दाढ़ी कर दे साफ ॥

**नरेश कुमार गुलाटी, नई दिल्ली**

प्र० : सूरज के ढलने पर शाम होती है, तो हुस्न ढल जाने पर ?

उ० : बचपना रहता नहीं है, छल-अकल आने के बाद,
खत्म होते ठसक-ठस्सा, हुस्न ढल जाने के बाद ।

**विपिन गोयल, धुरी गेट, संगरूर**

प्र० : जुल्फों को देख करके, बेहोश हो गए हम,
बस, इंतजार करते-करते ही सो गए हम ।

उ० : तेरी जब आँख खुल जाए, तो इतना काम कर देना,
मेरी जुल्फों को लहरा कर, सुबह से शाम कर देना ।

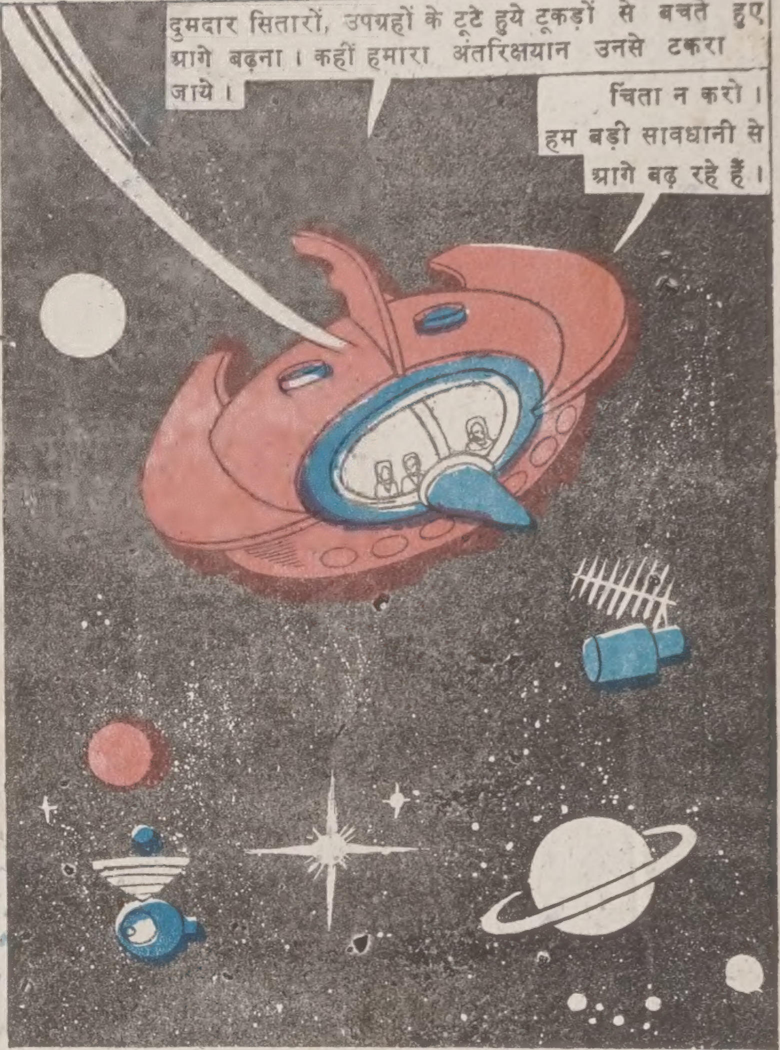
अपने प्रश्न केवल पोस्ट कार्ड पर ही भेजें

**काका के कारतूस**
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२

# मोटू पतलू

पिछ दिनों आग का एक बहुत बड़ा गोला आकाश से नीचे आ। तो सबने समझा की यह स्काईलैब है। पर वह गोला उड़न तश्तरी की शक्ल का अंतरिक्षयान था, जो मंगलग्रह के किसी अनजाने चाँद से उड़ कर अंतरिक्ष से होता हुआ यहां पहुंचा था। उस अंतरिक्ष यान में से खोपड़ीनुमां एक विचित्र प्राणी उतरा था, जो अपने 'स्पेससूट' में लगे शक्तिशाली यंत्रों से अपने सामने वाले की भाषा का अनुवाद सुन सकता था। वह विचित्र यंत्र उस प्राणी की भाषा का अनुवाद अपने सामने वाले की भाषा में बड़ी कुशलता से कर देता था।

घसीटा राम अंतरिक्ष से आये उस विचित्र प्राणी को अपने साथ ले आया था। घसीटा राम ने उससे यह सौदा किया था कि उसे बहुत काम के आदमी पकड़वा देगा और हर आदमी के बदले में दो दो हीरे लेगा। इस सौदे में उस विचित्र प्राणी ने मोटू-पतलू, डाक्टर झटका और चेलाराम के साथ आदमियों के सौदागर घसीटा राम का भी अपहरण कर लिया था और अब उनकी उड़न तश्तरी धरती से ऊपर उठकर अंतरिक्ष की गहराईयों में लाखों मील दूर तक कहीं से कहीं निकल आई थी।

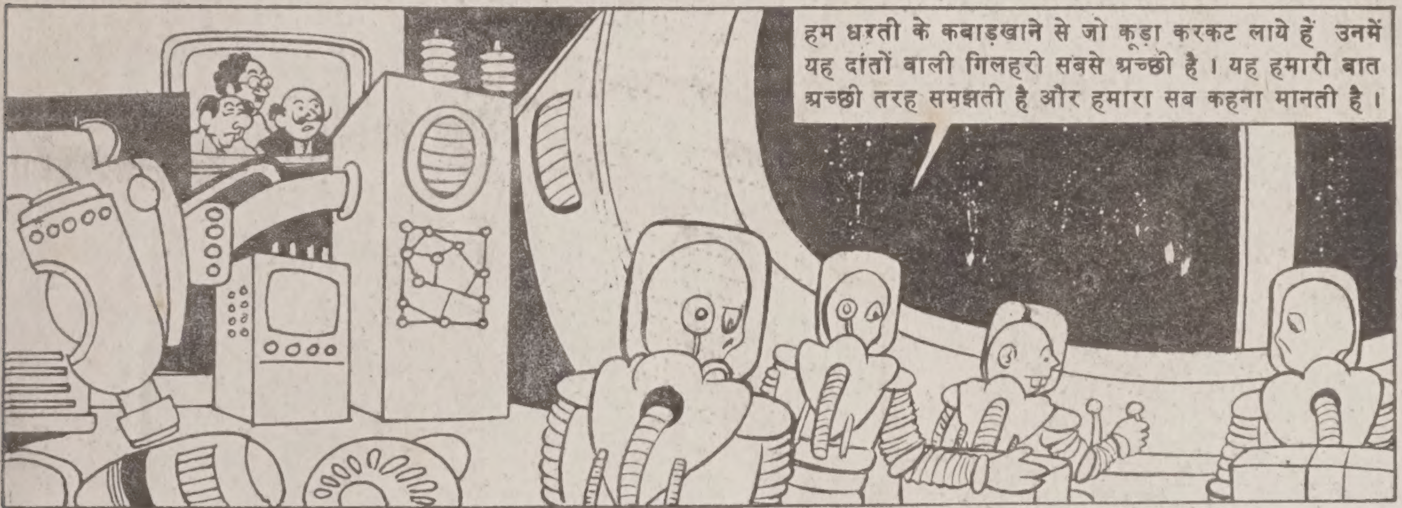










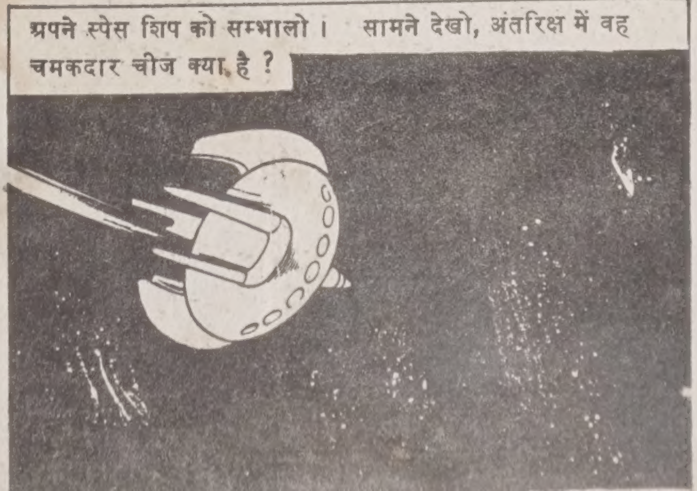

अब तक हमने दूसरे उपग्रहों से जितने प्राणी चुराये हैं, उनमें इसका दिमाग सबसे तेज है । कम्प्यूटर पर ब्रेनटेस्ट से पता चला है कि ब्रह्मांड के सभी जानदारों में यह गिलहरी सबसे अधिक प्रतिभाशाली है । यह अपनी बुद्धि से किसी भी असफल काम को सफल बनाने की क्षमता रखता है ।

हमें ऐसे ही एक चतुर प्राणी की आवश्यकता थी । दूसरे उपग्रहों से हमने कुछ ऐसी ही गिलहरियां और चुरा लीं तो मंडल ग्रह, शुक्रग्रह, बुद्धग्रह, कोई ग्रह ऐसा नहीं बचेगा, जहां हमारा झंडा न लहरा रहा हो ।



यदि वे धरती पर उतरते समय अपना यह 'गैस रहित' और गैस-प्रूफ स्पेस सूट न पहने होते तो धरती की आक्सीजन में मर जाते । वह आक्सीजन , धरती के मनुष्यों के लिये अनिवार्य है । उन विचित्र प्राणियों के लिये मौत का पैगाम है वे यह भी समझते थे कि चेला राम उनके उपग्रह पर उतरेगा तो बिना आक्सीजन के मर जाएगा । इसलिये उन्होंने उस को ऐसा स्पेससूट पहना दिया था जिसमें आक्सीजन का प्रबन्ध था । मोटू-पतलू, डा० झटका और घसीटा राम के बारे में वे खोपड़ी वाले प्राणी निश्चित रूप से नहीं कह सकते थे कि वे उनके उपग्रह पर जीवित पहुंचेंगे भी या नहीं । अंतरिक्ष में ही अभी उन विचित्र प्राणियों ने उन पर बहुत से प्रयोग करने थे । उन्होंने मोटू-पतलू, डा० झटका और घसीटाराम को जिस केबिन में रखा हुआ था, वहां आक्सीजन की सुविधा थी ।

अंतरिक्ष के इन विचित्र प्राणियों के साथ थोड़ी देर ही उनके यान में रहने के बाद चेलाराम ने समझ लिया था कि मोटू-पतलू चाहे कुछ कहें, मौके की नजाकत को समझते हुये इन प्राणियों की हर बात मानने में ही अपनी भलाई है । इनका विश्वास प्राप्त कर लिया तो जीवन सुरक्षित रहेगा । और इनके चुंगल से निकलने की तरकीब सोचने में आसानी रहेगी । वरना इस समय वे मौत के मुंह में पहुंचे हुये थे, इसमें तो कोई दो राय हो ही नहीं सकती थीं । इस प्रकार अपनी चिकनी चुपड़ी बातों से चेलाराम उनमें ऐसा घुलमिल गया था कि अब उन ही के परिवार का एक सदस्य बन गया था । उन्होंने चेलाराम को बताया था कि वे ऐसा 'स्पेससूट' पहने हुये हैं, जिसके अंदर कोई गैस घुस भी नहीं सकती । वे जिस उपग्रह के प्राणी हैं वहां कोई गैस नहीं ।





लगता है कोई दुमदार सितारा टूट कर हमारी ओर आ रहा है।
दुमदार सितारे से अपने स्पेसशिप को बचाने के लिये
मैं अपनी दिशा बदल रहा हूं। रॉडार पर उसकी दिशा ठीक हमारी ओर है।
स्पेसशिप के कन्ट्रोल पैनल पर तुम चले जाओ नं० २।
मैं वायरलैस कन्ट्रोल संभाले हुये हूं नं० ३।
और मैं रॉडार का कन्ट्रोल छोड़ नहीं सकती
तुम क्या कर रही हो नं० १?
मैं फ्यूल टैंक की चैकिंग कर रही हूं। इसमें कुछ गड़बड़ लगती है।
तुम इस गिलैहरी को कन्ट्रोल सम्भालने दो, मैंने इसे अंतरिक्षयान के हर लीवर और कन्ट्रोल के बारे में समझा दिया है। यह किसी हालत में भी कोई दुर्घटना नहीं होने देगी।



उसकी गति हमसे भी तेज है ।
वह हमारी ही ओर आ रहा है ।
हमसे टकरा कर वह हमारे अंतरिक्ष यान को चूर-चूर कर देगा ।
लेफ्ट की ओर मोड़ो अपने यान को ।
नहीं राईट की ओर ।
हमें बे-मौत मरवायेगी । अरे क्या कर रही है गिलैहरी की दुम ।
अरे बाप रे । बाल-बाल बच गये ।
दो सौ मील परे से बचा कर लाया हूं । तुम इसे बाल-बाल कह रहे हो ।
तना बड़ा पहाड़ सा पता नहीं कौन से उपग्रह से आया था ।
इस दांतों वाली गिलैहरी की दुम ने बड़ी सफाई से बचा दिया ।
मैंने कहा था, मैंने इसे अंतरिक्षयान का सारा कन्ट्रोल समझा दिया है ।
हम यहां मौत की घड़ियां गिन रहे हैं और चेलाराम उनमें घुलमिल कर कैसे मजे कर रहा है ।
हमारा साथी होने का दम भरता था । पर मुश्किल पड़ी तो दुश्मनों से जा मिला ।
ौये का बच्चा कोयल के साथ रहे तो कोयल थोड़े ही न जाता है ।
मुझे क्यों गाली दे रहे हो ? मैं तुम्हारे साथ हूं । तो क्या मैं कौये का बच्चा हूं ।
रॉडार पर फिर एक सिगनल मिला है । कोई चीज हमारी ओर बढ़ रही है ।
कोई दुमदार सितारा है, तो इस बार मैं इसकी दुम में धागा बांध कर उसको भगवान की खूंटी पर लटका दूंगा ।


दुमदार सितारा नहीं । यह तो किसी उपग्रह से आया हम जैसा ही कोई 'स्पेस शिप' है ।
रूस वालों की स्काईलैब होगी ।
नहीं उस जगह से तो हम बहुत आगे पहुंच गये हैं, जहाँ तक इस गिलैहरी की धरती के लोग पहुंच सकते थे ।
उसे सिगनल दो ।
सिगनल का जवाब सिगनल से मिल रहा है ।
फिर तो जरूर वह कोई स्पेस शिप है ।
हमारी ही ओर आ रहा है ।
बिप···बिप···बिप··बिप···बिप···!
इसका मतलब है, उनसे मुठभेड़ होगी । भयंकर मुठभेड़ ।
पता नहीं वे कौनसे ग्रह से आये हैं ? उनका विज्ञान कितना आगे है ? उनके पास कितने शक्तिशाली यंत्र हैं ?
हमसे अधिक शक्तिशाली होंगे । हमारे न चाहते हुये भी वे हमारे यान को अपनी ओर खींच रहे हैं ।
इससे पहले भी अंतरिक्ष में दूसरे उपग्रह वालों से हमारी टक्कर हुई थी ।
पर इस बार हमारे पास गेंडक समाप्त हो गये हैं ।
गेंडक समाप्त हो गये हैं ? अब क्या होगा ?
याद आया । इस गिलैहरी की धरती से जो हम एक झाड़ू जैसी मूंछों वाला जानवर पकड़ कर लाये हैं, वह गेंडक की तरह ही तो है ।
क्या कर रहे हो ? कहाँ ले जा रहे हो ? तुम्हें धेले का तजुर्बा नहीं है किसी शरीफ आदमी से बात करने का ।
हमारे पास गेंडक समाप्त हो गये हैं ।
गेंडक समाप्त हो गये हैं इन मेंडकों को पकड़ो ।
नहीं । हमारे उपग्रह पर जो गेंडक नाम का जानवर होता है, तुम्हारी शक्ल उससे मिलती है । हम अपने साथ जितने गेंडक लाये थे वह हमारे अंतरिक्ष प्रयोग में मर गये । अब हम तुमसे काम चलायेंगे ।
इस यंत्र के बोर्ड पर लेट जाओ ।


हे भगवान ! मैंने तेरे ऐसे कौनसे बैल मारे हैं जो तूने मुझे यह दिन दिखाया है। तेरे मेंडक को यह गेंडक बनाकर अंतरिक्ष प्रयोग कर रहे हैं। किसी मैडिकल कॉलेज में कोई खरगोश भी इस बेदर्दी से नहीं कटा होगा जिस बेदर्दी से यह मुझे काटेंगे।
इसे इस यंत्र पर क्यों लिया है इन खोपड़ियों नें ?
गोल गप्पे खुलाने के लिये नहीं जिटाया है इतना तो मुझे पता है।
हमें दो-दो हीरों के बदले बेच रहा था। खुद गंडेरियों के भाव बिक गया मुरारी लाल।
कैसा प्रयोग कर रहे हो तुम इस पर ?
हम इस गेंडक में 'इलैक्ट्रिसिटी' की हाई वोल्टेज देकर इसमें 'रेडियोविटि' पैदा करेंगे। फिर इसकी 'डैन्सिटी' देखेंगे। इसकी 'एटमिक एक्टीविटी' की जांच करेंगे। फिर इसे 'एन्टी ग्रैविटी' बना कर 'हाईड्रोसिटि बम' बना देंगे।
लगता है यह कानपुर सिटी या हैदराबाद सिटी बना देंगे इस गरीब को।
हां। सब कनेक्शन ठीक हैं। अब जरा एटमी भट्टी से बिजली की हाई वोल्टेज करन्ट दो इस गेंडक में।
LOW
HIGH
लो। इतनी ठीक है ?
मर गया मोतियों वाला। बिजली से भुन कर मोती महल का तंदूरी मुर्गा बन जाएगा।
LOW
HIGH
आह
अभी वोल्टेज कम दी है। बात बनी नहीं।
बात बनाते-बनाते यह मर जायेगा।
मर जाने दो। हमारे पास यह और गेंडक तो हैं प्रयोग के लिये।
इसके बाद हम मेंडकों का नम्बर आयेगा। तैयार हो जाओ प्यारो !
अंतरिक्ष की लड़ाई के लिये 'रेडियोविटी' और एटमिक 'हाईड्रोविटी' से बम बनाने का यही एक तरीका है।


और हाई वोल्टेज दो ।
और हाई वोल्टेज दो ।
हां अब ठीक है ।
अब इसे छूना मत । यह बीस हजार वोल्ट का इतना करारा झटका मारेगा कि छूने वाला खील-खील हो जायेगा ।
वह स्पेसशिप बहुत पास आ गया है । केवल एक लाख मील दूर है ।
कोई बात नहीं । हमारा हाईड्रोविटी बम भी तैयार है उससे टक्कर लेने के लिये ।
इसे वेंटीलेटर के रास्ते अंतरिक्ष में फेंक दो ।
हां अब दबाओ लिवर ।
दबा दिया ।
हो गया सत्यानाश बेचारे का ।
शू...शू







आगामी अंक में इनसे फिर मिलिये।

# आपस की बातें
चचा बातूनी की कलम दवात से

अपने प्रश्न केवल पोस्ट कार्ड पर ही भेजें ।

**हरीशंकर शर्मा—हरीद्वार** : मैं दीवाना में अपना कोई विज्ञापन दूं तो क्या उसका कोई असर होगा ?

उ० : जी हाँ, अवश्य होगा, एक बार हमने एक समाचार पत्र में अपने घर के लिए एक चौकीदार की आवश्यकता का विज्ञापन दिया था। हमारे घर में उसी रात चोरी हो गई।

**राजेन्द्र सिंह—अमृतसर** : चाचा जी, क्या आप अपना असली नाम बताने का कष्ट करेंगे ?

उ० : अब तो यही असली नाम है और इस नाम के पीछे एक बहुत बड़ा राज है। आप ने देखा होगा। एक आदमी का नाम करोड़ीमल है और भगवान की उस पर वह मार पड़ी है कि पास कोड़ी भी नहीं। जिस का नाम धनीराम है वह सड़कों पर भीख माँग रहा है। जिस का नाम नैनसुख है, वह एक आँख से काना है। भीम सिंह एक हाथ से टुटा है। गैंडामल सूख कर तिनका बना हुआ है। चतुरसैन की बुद्धि में भूसा भरा हुआ है। इसीलिए हमने अपना नाम चाचा बातूनी रखा है। अब भगवान से कहिये, इस नाम के हिसाब से हमारा कुछ बिगाड़ा जाये तो बिगाड़ ले।

**पीतम सिंह—नई दिल्ली** : आप दीवाना में लोगों को ज्ञान देने वाली शिक्षा प्रद बातें क्यों नहीं देते।

उ० : क्यों कि हम नहीं चाहते कि लोग दीवाना पढ़ना छोड़ दें। एक बार हमारे पड़ोसी वर्मा जी ने एक समाचार पत्र में सिग्रेट पीने के विरुद्ध लम्बा चौड़ा लेख पढ़ा, हमने वर्मा जी से पूछा, कहिए, लेख का कुछ असर हुआ ? वे बोले, 'बहुत असर हुआ है।' हम ने फिर पूछा, 'उस असर का नतीजा क्या निकला ?' वर्मा जी ने कहा, 'मैंने वह समाचार पत्र पढ़ना छोड़ दिया है।'

**योगेश संघवी जैन—बेरमो** : क्या छोटे घरों की तरह बड़े घरों में भी छोटी-छोटी बातों पर झगड़े होते हैं ?

उ० : वहाँ बे-बात के झगड़े होते हैं।

**प्रभजोत सिंह चुक—लुधियाना** : क्या यह सच है कि एक स्काईलैब गिरने के बाद अब दूसरा स्काईलैब गिरने का खतरा है ?

उ० : जी हाँ, कई स्काईलैब गिरने का खतरा है, दो 'देसाईलैब' और 'बाजपाईलैब' पिछले ही दिनों गिरे हैं। कुछ लोगों का विचार है, यह भी अमरीका की 'प्रयोगशालायें' थीं।

**महाराज अग्रवाल फुसरो—बिहार** : चाचा जी, मैं आपका गुरू बनना चाहता हूं। क्या आप मेरा चेला बनना स्वीकार करेंगे ?

उ० : अवश्य-पर ऐसा चेला बनेंगे जिसके लिए लोग कहते हैं, 'गुरूमार चेला।'

**हरीशचंद्र सुखदेव—कल्याण** : क्या आप बता सकते हैं कि लोग दीवाना क्यों पढ़ते हैं ?

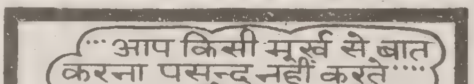
उ० : यह देखने के लिए कि हमारा दिमाग कहाँ तक खराब है और उनका दिमाग कहाँ तक खराब होना बाकी है।

**तरसेम राही 'रिंकू', योगा** : लोग मौत से भी अधिक, पत्नी से क्यों डरते हैं ?

उ० : क्योंकि वे जानते हैं कि मौत से तो केवल एक बार ही वास्ता पड़ता है।

**सुरिंद्र जमशेदपुरी, 'बबलू' भोरे—मणिपुर** : यदि चूहे दानी में बिल्ली घुस जाए तो ?

उ० : वह हालत हो जो आज 'जनता पार्टी' की हो रही है।




**खालिक हुसैन, मो. मुन्शी—खंडवा** : चाचा जी, हम यों कोई धन्धा करना चाहते हैं, पर हमारे पास पैसे नहीं हैं, अगर आप दे सकते हैं तो हमारे पते पर भेज दीजिये।

उ० : हम आपको पांच पैसे भेज रहे थे। फिर सोचा पता नहीं इनसे आपका काम चलेगा या नहीं। इसलिये हम कोरा मनिआर्डर भेज रहे है। डाकिया लेकर आये तो रकम उस पर आप खुद भर लीजिये।

**भीम सिंह चौहान—अलवर** : क्या आप सरदर्द के लिये कोई अच्छी-सी दवा तजवीज कर सकते हैं ?

उ० : जी हां, उस दवा का नाम है चन्दन। पर इसीलिये किसी शायर ने कहा है।

दर्दे सर के वास्ते माना के चन्दन है दवा,
इसका घिसना और लगाना दर्दे सर ये भी तो है।

**धर्मेन्द्र किशोर, दुर्गा—रायपुर** : चाचा जी, आप दूसरी पत्रिकाओं की तरह दीवाना का भी कोई विशेषांक क्यों नहीं निकालते ?

उ० : विशेषांक की 'खिचड़ी' पतीले में डाल कर चूल्हे पर चढ़ाई हुई है। आशा है जल्द ही पक कर आपकी थाली तक पहुंच जाएगी। दीवाना में एक विशेषता तो यह आई है कि हमने रंगीन पृष्ठों को उलट-पलट करके इसका साईज बड़ा कर दिया है। कहिये, यह तबदीली आपको कैसी लगी ?

**अतितुल्ला खान—धनबाद** : चाचा जी, क्या आपने जीवन में कभी किसी लड़की से प्यार किया है ?

उ० : जैसे सब कहते हैं, वैसे ही हमने भी बस एक से सच्चा प्यार किया है। जी हां, अपनी मां से। कहिये, मां लड़की होती है ना ?

**बलीराम, धर्मानी—रायपुर, धनबाद** : चाचा जी, आप 'बातूनी' का धंधा छोड़कर कोई और धंधा क्यों नहीं कर लेते ?

उ० : क्यों आप हमें उल्टे रास्ते पर लगाने की सलाह दे रहे हैं ? भला दूसरों का धन्धा चौपट करने वाले धन्धे से भी बड़ा कोई धंधा हो सकता है ?

**अजय कुमार शैतान—ग्वालियर** : चाचा जी, आपकी कलम कितनी पैनी है ?

उ० : मोरारजी एण्ड कम्पनी के जरा सी चुभाई थी, वहां से आज तक हाय-हाय की आवाजें आ रही हैं !

**दिलीप कुमार पिपलानी—हापुड़** : चाचा जी, आदमी का टिकट पूरा, बच्चे का आधा, तो बौने का कितना लगेगा ?

उ० : यदि वह कन्धे से लटके थैले में आ सके तो कुछ भी नहीं।

**खालिक हुसैन—खण्डवा** : मेरे दिल के टुकड़े टुकड़े हो गये हैं, क्या आप डाक्टर झटका से कह कर इन्हें जुड़वा सकते हैं ?

उ० : जी हाँ, दिल जोड़ना तो उनके लिए दिल्लगी की बात है। दिल जुड़ने के बाद आप के जिस्म में कुछ और साबत बचेगा या नहीं, इस बात की कोई गारंटी नहीं है।

**आपस की बातें**
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

# स्वर्ग में अंधेर गर्दी

विनोद कुमार

जब से आधुनिक साधनों ने स्वर्ग लोक में प्रवेश किया तब से वहां की काया ही पलट गयी। घर पर टेलीफोन, बिजली, टेप रिकार्ड, पंखा, फ्रीज आदि चीजों ने प्रवेश पा लिया, जिससे यहां एक ओर कुछ आराम मिले वहीं दूसरी ओर जो अव्यवस्था फैली वह महामुनी श्री नारद जी ने हमें एक भेंट वार्ता में बताई। श्री नारद जी ने बताया कि एक दिन भगवान विष्णु अपने डाइनिग रूम में बैठे थे और लक्ष्मी जी उन्हें खाना परोसने की तैयारी कर रही थीं। विष्णु जी खाने का बड़ी बेसब्री से इन्तजार कर रहे थे क्योंकि उन्हें बहुत जोर की भूख लगी थी। और लगे भी क्यों ना, आजकल व्रत जो चल रहे थे।

परन्तु स्वर्ग लोक में इतनी जल्दी खाना टेबल पर लगाना कोई संभव तो है नहीं क्योंकि वहां भोजन के लिये छत्तीस प्रकार के व्यंजन बनाये जाते हैं। आखिर परोसने में कुछ टाइम तो लगेगा ही। खैर लगते-लगते जब पूरे व्यंजन टेबल पर आ गये तो विष्णु जी ने चैन की सांस ली और बड़े चाव से खाना शुरू कर दिया।

डाइनिंग रूम के बीचों-बीच लगा पंखा भगवान को हवा कर रहा था। जबसे बिजली का पंखा भगवान की कोठी में लगा था तब से लक्ष्मी जी ने हाथ से पंखा झलने की किल्लत से छुटकारा पा लिया था। भगवान भोजन करने में व्यस्त थे कि उन्हें प्यास लगी, उन्होंने डाइनिंग टेबल पर नजर दौड़ाई परन्तु उन्हें पानी नहीं नजर आया। उन्होंने लक्ष्मी जी से पूछा कि क्यों आज पानी रखना भूल गयीं? लक्ष्मी जी ने जवाब दिया, नाथ आज नल बहुत थोड़ी देर के लिये आये थे और वह भी बहुत कम प्रेशर से जितना पानी आया था उससे भोजन बना लिया, अब पीने को पानी बचा ही नहीं। अभी यह बातें हो ही रही थीं कि इतने में लाइट चली गयी और पंखा बन्द हो गया। मारे गर्मी के विष्णु जी का बुरा हाल हो गया। चारों ओर अंधकार छा गया। हमारे पुराणों में लिखा है कि अंधेरे में भोजन करने से पाप लगता है। अतः भगवान भूखे ही उठ गये।

उन्होंने तुरन्त अपने निजी सैक्रेटरी को बुलाया और उसे आज्ञा दी कि जल्दी पावर हाऊस को फोन करके पूछो कि लाइट क्यों चली गयी। तो प्रत्युत्तर में सैक्रेटरी खीसें निपोर कर बोला, भगवान यहां तो अंधेरा ही अंधेरा है। ऐसे में टेलीफोन भी तो दिखाई नहीं दे रहा है। फोन करूं तो कैसे करूं? भगवान को गुस्सा तो बहुत आ रहा था परन्तु गुस्से को जप्त करके सैक्रेटरी को टार्च देते हुए बोले, यह लो टार्च और जल्दी से बिजली वालों को फोन करके लाइट ठीक कराओ। मेरा तो गर्मी के मारे बुरा हाल है। यह कह कर विष्णु जी ने लक्ष्मी जी से कहा कि थोड़ा हैन्ड फैन से ही हवा कर दो। लक्ष्मी जी ने पंखा झलना शुरू कर दिया। (बड़े बे-मन से क्योंकि बहुत दिनों से बिजली का पंखा लग जाने के कारण अब हाथ से पंखा झलने पर हाथ दर्द करने लगते थे) थोड़ी देर बाद सैक्रेटरी ने आकर बताया कि सरकार टेलीफोन तो खराब है। भगवान न कहा पता नहीं इन सब विभागों को क्या होता जा रहा है? सैक्रेट्री ने कहा महाराज आजकल लोकतंत्र का शासन हं। कोई किसी की नहीं सुनता है। भगवान ने कहा, खैर हमारी एम्पाला ही निकाल दो हम अभी जाकर बिजली बिभाग वालों को सही करके आते हैं। महाराज कार में पैट्रोल तो है ही नहीं क्योंकि पैट्रोल पम्प वालों ने हड़ताल कर रखी है। सैक्रेट्री ने मजबूरी जाहिर की। उन्होंने तुरन्त अपने प्राचीन साधन गरुड़ को बुलाया और उससे कहा कि जल्द से जल्द विद्युत आपरेटर को बुलाकर लाओ। गरुड़ ने जाकर आपरेटर से कहा



# छींटा कशी

'मुझे कोई पार्टी से नहीं निकाल सकता। मैं जनता पार्टी छोड़कर नहीं जाऊंगा'—राजनारायण

(अजी साहब आप क्यों जायेंगे? जाये आपकी इज्जत आबरू)!

'अगर हमें जनता पार्टी और आर एस. एस. में से एक चुनने के लिए कहा गया तो हम आर एस. एस. को चुनेंगे'—सुन्दर सिंह भंडारी

(कुत्ते की पूंछ बारह साल नली में रही फिर भी टेढ़ी रही।)

'साबुन का प्रयोग छोड़ना चाहिए। इससे त्वचा की चिकनाहट खत्म हो जाती है।'—चरण सिंह

(शहर वालों के पास चिकनाहट कहां है? शहर वालों का सारा तेल तो बजट में निकाल लिया आपने।)

'मैं देश के लिए कुछ भी करने को तैयार हूं।'—इंदिरा गांधी

(क्या संजय गांधी को राजनीति से हटाने के लिए भी?)

'हम एटम बम नहीं बनायेंगे।'

—मोरार जी देसाई

(आप बनाना चाहें तो भी नहीं बना सकेंगे। बातें बनाने के इलावा और कुछ बना सकने लायक ही नहीं हैं आप लोग।)

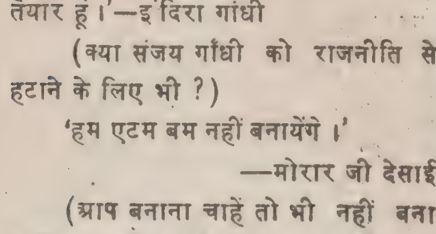
'हम यहां सब कुछ फतह करने आये हैं।'—वेंकट राघवन इंगलेंड पहुंचने पर

(इससे साबित होता है कि अभी तक हम अपनी औकात पहचान नहीं पाये।)

'हम असली गुटनिरपेक्षावाद की नीति पर चल रहे हैं।'

—अटल बिहारी बाजपेई

(नकली साबित करने वाले को १००० रुपये मिलेंगे?)

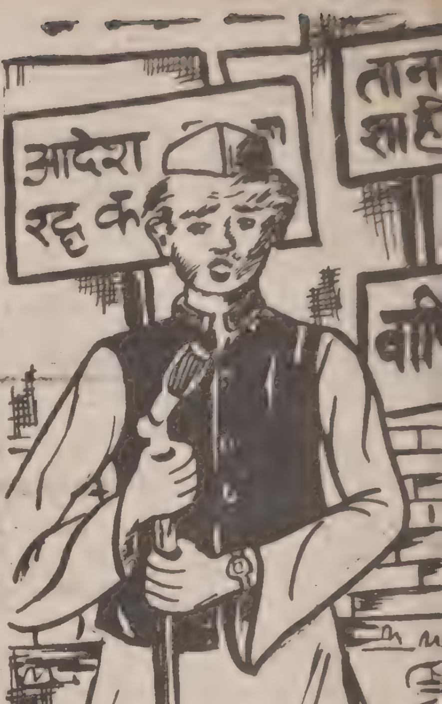



कि तुमको विष्णु भगवान ने याद किया है। बेचारा आपरेटर डरता हुआ विष्णु जी के ड्राइंग रूम में पहुंचा। जैसे ही वह विष्णु भगवान के सामने पहुंचा उन्होंने उसे आड़े हाथों लेते हुए डाटना फटकारना शुरू कर दिया। बेचारा आपरेटर भय के कारण यह भी न बता पाया कि लाइट की कटौती शासन के आदेश से की जा रही है। भगवान ने उसे अन्तिम चेतावनी देते हुए कहा कि अब अगर कभी लाइट गई तो तेरा ट्रांसफर नर्क में कर दूंगा। आपरेटर बेचारा चुपचाप सुन कर चला गया।

एक दिन भगवान ने सोचा कि आज क्यों ना कोई गाने का प्रोग्राम कराया जाये क्योंकि बहुत दिनों से टेपरिकार्डर, टेलीविजन पर प्रोग्राम देखते सुनते बोर हो गये हैं। उन्होंने इसी आशय के लिये उर्वशी, मेनका आदि नर्तकियों को संगीत हाल में बुलवा लिया। शाम सात बजे नृत्य-गायन शुरू हो गया। सभी स्वर्गवासी कार्यक्रम का झूम-झूम कर आनन्द ले रहे थे क्योंकि ऐसा प्रोग्राम बहुत दिनों बाद हो रहा था। हर स्वर्गवासी शुद-बुध भूल कर नृत्य कला देखने में खोया था। भगवान विष्णु को भी पूर्ण मजा आ रहा था कि इतने में लाइट चली गई। सारे कार्यक्रम का मजा किर-किरा हो गया। चारों तरफ अन्धेरा छा गया। इस अंधकार का लाभ असामाजिक तत्वों ने भी उठाया। पूरे हाल में लड़कियों और औरतों, बच्चों की चीखने चिल्लाने की चारों तरफ से आवाजें आने लगीं।

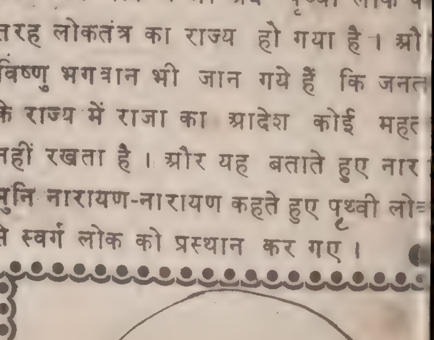
भगवान क्रोध से आग-बबूला हुए जा रहे थे। उन्होंने तुरन्त टार्च सम्भाली और चार सेवकों एवं सेक्रेटरी के साथ कार में बैठ कर पावर हाउस जा पहुंचे। वहां का नजारा देखते ही उनका खून खौल उठा। वहां आपरेटर आपस में बैठे गप्पें लड़ा रहे थे। उन्होंने आवेश में आकर आपरेटर के नर्क में ट्रांसफर करने के आदेश दे दिये। आपरेटर बहुत गिड़गिड़ाये पर विष्णु जी ने उनकी एक न सुनी।

आपरेटरों ने उपयुक्त घटना अपनी यूनियन के अधिकारियों को बताई यूनियन के नेताओं ने उसी दिन से धरना रख दिया। उनका कहना था कि संसद विष्णु भगवान के आदेश रद्द करे और आपरेटरों के ट्रांसफर कैंसिल किये जायें। क्योंकि संसद के आदेश से ही लाइट की कटौती का बिगुल पास हुआ था। संसद ने इस पर विचार कर भगवान विष्णु के आदेशों को रद्द कर दिया।




आगे श्री नारद मुनि ने नारायण नारायण करते हुए बताया कि ऐसा मैं अपनी जिन्दगी में पहली बार देखा था जबकि विष्णु जी के आदेश रद्द हुए हों। दूसरे दिन विष्णु जी के हाथ में एक नोटिस था जिस पर वे बार-बार टेढ़ी नजरें डाल रहे थे। उस नोटिस पर लिखा था कि भगवान विष्णु के आदेशों को रद्द किया जाता है।

आगे मैंने महामुनि से पूछा कि फिर क्या हुआ? तो उन्होंने बताया कि होता क्या स्वर्ग लोक में भी अब पृथ्वी लोक की तरह लोकतंत्र का राज्य हो गया है। और विष्णु भगवान भी जान गये हैं कि जनता के राज्य में राजा का आदेश कोई महत्व नहीं रखता है। और यह बताते हुए नारद मुनि नारायण-नारायण कहते हुए पृथ्वी लोक से स्वर्ग लोक को प्रस्थान कर गए।



# फैण्टम — जंगल शहर



जब भी मैं इस मूर्ति को देखती हूँ, मेरी आंखें भर आती हैं।
बहुत सुन्दर नजारा। पुराने समय में इसे देवी मानते थे।
कितना मजा आ रहा है तुम्हें शहर दिखाने में। तुम्हें कल जरूर जाना है।
थोड़े दिन में वापस जंगल जाना है।
यह मुझे दो।
नहीं! बचाओ!
बचाओ! ओह!
!!
अरे वह बूढ़ी औरत!
!
चोर!
?!
वापस भाग जा यहां से।
CLICK
ऊह ह।
निकम्मा
वह औरत मर सकती थी।
एक चोर! इनको गिराकर, दिन दहाड़े बटुआ छीन कर भागा।
दुनिया!
तुम उसे अपने आप देख लोगे, मेरा पति उसके पीछे गया है।
अगर तुम्हारा पति भाग्यशाली है तो वह उसे नहीं पकड़ पायेगा।
यह लो!

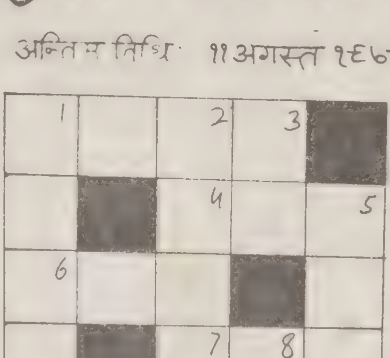



दीवाना

# वर्ग पहेली

## 10 रुपये पुरस्कार जीतिये

अन्तिम तिथि ११ अगस्त १९६९



### संकेत

**बायें से दायें**

१. जादू के बोल को हाथ लगाओ और गायब । (१-३)

४. बीते या आने वाले रोज सिगरेट के सुट्टे मारने का बर्तन ? (३)

६. रूठी हुई को इस ठंडी जगह ले जाओ। (३)

७. पेड़ पर लाभदायक होना ? (३)

९. हैवान को बीमारी शुरू हुई तो मजार में आकर खत्म हुई । (२)

१०. दिमाग रखने की जगह चोरी से देख । (२)

**ऊपर से नीचे**

१ चेतावनी जो अस्पृश्यता का प्रचार करती है ! (२,२,१)

२. फूलों सी ऊन कातने वालों के पीछे फकीरों का मुखिया लग जाये तो कष्ट होगा । (४)

३. अमीर लड़कों से घुलमिल जाओ। (२)

५. शर्करा से दूर करा कर उसमें आखिरी जाम मिलाने के बाद सूंघना लज्जाजनक है ? (४)

८. गाने वाला बेल । (२)

# कार्टून बनाइये प्रतियोगिता

## इनाम ५ रु०

निम्न चुटकुले पर आप हमें कार्टून बना कर भेजिये ।

चुटकुला—(महिला पर्वतारोही दल की नेता पत्रकारों से) : 'हमारी सबसे ज्यादा कठिनाई ऑक्सीजन की कमी थी। एक सिलेंडर पांच मिनट के गपशप में ही खत्म हो जाती थी ।'

अन्तिम तिथि— ११ अगस्त १९६९

# शेर या कविता गढ़िये प्रतियोगिता

## ५ रु० जीतिये

गर्मियों में प्रायः जाने वाली बिजली को ध्यान में रखते हुये आप चार लाइनों की कविता या शेर रचिये—लाइनों के अन्तिम शब्द निम्न होने चाहियें ।

______________ गुल्ल
______________ पुल्ल
______________ कुल्ल
______________ धुल्ल

अन्तिम तिथि ११ अगस्त ६९

# क्यों और कैसे

**प्र० : मेंढ़क किस प्रकार टर्राते हैं ?**

उ० : यदि आप किसी झील या तालाब के निकट रहते हैं तो मेंढ़कों के टर्राने से अवश्य ही परिचित होंगे। कभी-कभी तो ये इतना शोर करते हैं कि सोने से नींद खुल जाती है। मादा मेंढ़क चोट इत्यादि लगने पर ही कुछ आवाज करती है। वैसे टर्राने की आवाज नर मेंढ़क ही करते हैं। इस टर्राने का मुख्य कारण मादा को अपनी ओर आकर्षित करना ही समझा जाता है परन्तु ये टर्राना संगम-ऋतु तक ही सीमित नहीं रखते। मेंढ़कों का टर्राना संगम-ऋतु के बहुत बाद तक भी सुना जा सकता है।

मेंढ़क सांस खींच कर अपने नथुने तथा मुँह को बन्द कर लेता है तथा वायु को फेफड़े तथा मुँह के बीच आगे पीछे फेंकता है। इस वायु से स्वर तन्तु हिलते हैं और टर्राने की आवाज उत्पन्न होती है। कई प्रकार के मेंढ़कों के स्वर थैली होती हैं, ये स्वर थैली मुँह में खुलती हैं। जब मेंढ़क गाता है स्वर थैलियां हवा से भर कर फूल जाती हैं। ये स्वर उत्पन्न करने वाले रजोनेटर का कार्य करती हैं और मेंढ़क की अद्‌भुत आवाज़ उत्पन्न होती है। अमरीका के बुलफरौग नाम के मेंढ़क की आवाज कभी-कभी एक मील की दूरी पर भी सुनाई देती है।

हालांकि व्यस्क मेंढ़क के फेफड़े होते हैं परन्तु ये सांस की वायु सीधी फेफड़ों में नहीं ले जाते। ये वायु को अपने दो नथुनों में खींचते हैं, साथ-साथ अपने गले को नीचे कर लेते हैं फिर नथुने बंद कर, गले को ऊपर उठा कर मेंढ़क वायु को फेफड़ों में धकेल देता है।

क्या आप जानते हैं कि मेंढ़क अपना भोजन निगलने में अपनी आँखों की सहायता लेता है। मेंढ़क अपना शिकार अपनी चिपचिपी जीभ से पकड़ते हैं। शिकार जीभ पर चिपकाते ही ये जीभ को अन्दर मोड़ लेते हैं। मेंढ़क की बड़ी-बड़ी फूली हुई बाहर को निकली हुई आंखें, मुँह से केवल एक पतली झिल्ली से अलग होती हैं और आंखें बन्द करने पर ये अन्दर को फूल जाती हैं। इस लिए मुँह के भीतर कोई कीडा इत्यादि आते ही मेंढ़क अपनी आंखें बंद कर लेता है। तथा आँखों का [illegible] को फूलना भोजन को मेंढ़क के गले में धकेल देना है। मेंढक मनुष्य के लिए [illegible] है क्योंकि कीड़े मकोड़े खा कर उनकी संख्या को सीमित रखने में सहायता करते हैं।

**प्र० : क्या जवाहरात पहनने से शरीर पर कोई प्रभाव होता है, बर्थस्टोन या जन्म से जुड़े जवाहरात कौन से होते हैं ?**

उ० : आदि सभ्य समाजों में बहुतों का विश्वास था कि मूल्यवान जवाहरात का रहस्यमय प्रभाव होता है तथा इनको पहनने से कुछ रोगों से भी रक्षा होती है।

आज भी जवाहरात पहनने का चलन है। कुछ लोग इन्हें शौकिया तथा कुछ बर्थस्टोन के रूप में प्रभाव के लिए जवाहरात पहनते हैं। जवाहरात पहनने का चलन बहुत पुराना होते हुए भी बर्थस्टोन पहनने का रिवाज़ सोलहवीं शताब्दी में ही आरम्भ हुआ था। हर माह से एक रत्न जुड़ा है जिसे बर्थस्टोन समझा जाता है। ये इस प्रकार हैं—

जनवरी—गारनेट, फरवरी—एमिथिस्ट, मार्च—ब्लडस्टोन या एक्वेमेरीन अप्रैल—हीरा, मई—पन्ना, जून—मोती, जुलाई—चुन्नी या रूबी, अगस्त—पेरीडोट, सितम्बर—नीलम, अक्तूबर—ओपल, नवम्बर—टोपेज, दिसम्बर—फिरोजा।

जवाहरात का शरीर पर प्रभाव मानना मनुष्य का एक सबसे आश्चर्यजनक विश्वास है। आज भी लगभग हर समय समाज में रत्नों के प्रभाव को माना जाता है। कहा जाता




है कि फिरोजा पहनने से पति-पत्नी में झगड़ा नहीं होता, एक्वेमेरीन से दम्पति में प्यार बढ़ता है। टोपेज विश्वास का चिन्ह है। इसके पहनने वाला दम्पत्ति जीवन भर एक दूसरे पर अनुराग रखते हैं। इसके अतिरिक्त कुछ जवाहरात को रोग से रक्षा करने की शक्तिवाला भी माना जाता है। जैसे सिर दर्द के लिए एमिथिस्ट को प्रभावशाली मानते हैं तथा हीरा पहनने से कोढ़, पागलपन तथा रात को डरावने सपनों से बचा जा सकता है। एगेट का ज्वर पर प्रभाव होता है और नीलम रात में दुरात्माओं से रक्षा करता है। बच्चों को हर प्रकार की हानि से बचाने के लिए लोग जेड के पायजेब पहनाते हैं। हिन्दुओं का विश्वास है मोती मनुष्य को हर प्रकार की हानि से बचाता है तथा गारनेट अपने लाल रंग के प्रभाव से चोट से बचाता है। फिरोजा पहिन कर घुड़सवारी करने पर सवार गिरने से बचता है तथा ऐसे लोग भी हैं जो समझते हैं ओपल का हार पहनने से सुनहरी बालों के रंग की रक्षा होती है।

**प्र० : पंखा चलाने से हम ठंडक क्यों अनुभव करते है ?**

उ० : जब हम सर्दी या गर्मी अनुभव करते हैं तो वास्तव में हम अपने रक्त का ताप अनुभव करते हैं। हमारा शरीर ९४.६ फेरनहीट पर अपना तापमान बनाये रखना है चाहे बाह्य वातावरण का तापमान कुछ भी हो। इसका अर्थ ये बिल्कुल नहीं है कि शरीर के भीतर का तापमान बढ़ता या घटता नहीं अपितु भीतरी तापमान के बढ़ने या घटने पर शरीर कुछ ऐसी व्यवस्था कर लेता है कि ये ठीक बना रहे। इस व्यवस्था का कार्य दिमाग से आरम्भ होता है, जिसके आदेश से ठंडा होने पर रक्त का तापमान बढ़ा दिया जाता है तथा गर्म होने पर इस घटाने की व्यवस्था की जाती है।

मान लो कि रक्त का तापमान बहुत घट गया है, ऐसे में नर व सिस्टम को तुरन्त कार्य करने का आदेश दिया जाता है और शरीर की कुछ ग्रन्थियों की एनजाईम उत्पन्न करने का आदेश मिलता है जिनके प्रभाव से शरीर में आक्सीजन तेजी से जलनी आरम्भ होती है तथा मांसपेशियों और जिगर में उपचयन बढ़ जाती है। शरीर की रक्त नाड़ियों में सिकुड़न आ जाती है और विकिरण द्वारा गर्मी की हानि कम होती है। इसी प्रकार तापमान गिरने पर शरीर की मांसपेशियों को कार्यरत कर शरीर में कंपकंपी उत्पन्न की जाती है जिससे शरीर में गर्मी उत्पन्न होती है। जब कोई तरल पदार्थ सूखता है तो ये गैस में बदल जाता है जिससे गर्मी कम हो जाती है। पसीना आने पर ऐसा ही होता है। शरीर से निकला पसीना एक फुहारे के समान होता है जो शरीर को बाहर और अन्दर से धो देता है। ये पसीना हमारे शरीर के अति बारीक सहस्त्रों छिद्रों से बूंदों के रूप में बाहर आता है। यदि शरीर के पास की हवा सीली या उमस भरी होती है तो पसीना कम सूखता है तथा गर्मी लगना कम होता प्रतीत नहीं होता परन्तु पंखे के नीचे या पास बैठने से पसीना अधिक शीघ्रता से सूखता है और शरीर में गर्मी कम होती जाती है और हम ठंडक अनुभव करते हैं।

**क्यों और कैसे**
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२


सिलबिल पिलपिल की
सी.आई.ए. एजेंट
से जबरजंग टक्कर
याड़ी थम दोनों ने बहुत ही महान काम किये हैं। तुम्हारे काम की महानता के सामने जवाहरलाल नेहरू की महानता भी ऐसी ही छोटी लगती है जैसे भैंस के गोबर के सामने कबूतर की बीट। सारा देश तुम पर नाज करता है। थम दोनों ने एक ही काम नहीं किया है, वह है लेखक बनने का।
चलो लेखक बन-कर दिखा देंगे।
अब सिर्फ सवाल यही रह गया कि हम किस तरह के लेखक बनें। कहानी लिखें, उपन्यास लिखें या कविता लिखें! एक को चुनना पड़ेगा।
याड़ी उपन्यास न लिखना। थमने उपन्यास लिखा तो बेचारा गुलशन नन्दा मारा जायेगा। उसके नाबिलों को फिर कोई नहीं पूछेगा। उसके ग्यारह छोटे-२ बच्चे हैं। उनको अनाथाश्रम में भर्ती करना पड़ेगा। तुम पर पाप लगेगा। कविता लिखना भी खतरे से खाली नहीं है। काका हाथरसी का ख्याल करो! दाढ़ी सफेद से पीली हो जायेगी। अपने याड़ियों को नहीं मारना चाहिये।
तुम दोनों वैसे भी क्रान्तिकारी हो। इसलिये क्रांति की किताब लिखो, जिसे पढ़कर सारे देश में भूचाल आ जाये……
लोगों के मकानों की खिड़कियाँ तिड़कने लग जायें। देश में एक लहर पैदा हो, उस लहर में से हम मक्खन निकालेंगे। हमारे देश में क्रांति के प्रगतिशील लेखकों की अत्यन्त कमी है। जो हैं उनके मुँह पर बन्दर छाप कालिख पुत गयी है उन्होंने आपातकाल में शर्म हया छोड़कर फासिस्टों की चमचागीरी की।


चूहे तेरी बात तो बहुत मार्के की है। एक जरूरी बात करनो है तेरे से। तू मेरे साथ बाथरूम में चल। कहीं कोई सुन न ले।
यह तो बता कि हम क्रांति की किताब लिखेंगे तो फोकट का ही काम होगा कि उसमें कुछ तरमाल भी धरया है ?
शSSSSS। मैं जभी तो सलाह दे रिया हूँ यह। मैं तुमसे मिट्टी में हाथ डलवाऊंगा ? इसमें माल ही माल धरया है। इतना तर माल हाथ लगेगा कि थमारे सारे तोलिये मैले हो जायेंगे।
क्राँति की पुस्तक लिखोगे तो रूस की सरकार खुश हो जायेगी। थमको लेनिन एवार्ड और सोवियत लैंड पुरस्कार मिलेगा। मुफ्त में मास्को की सैर का सुनहारा मौका भी हाथ में आ जायेगा। आम के आम और गुठलियों के दाम रहेंगे। थम दोनों जासूसी का धंधा भी करते हो। हो सकता है रूसी जसूसी संस्था के.जी.बी.थम दोनों को रूस के लिए हिन्दुस्तान में जासूसी करने का पूरा ठेका ही दे दे। मेरी भी सेहत बन जायेगी। मुझे रूसी पनीर बोत अच्छा लगता है।
लालझंडी
हम प्रगतिशील अखबार निकालेंगे। इसके लिये हमें जादा मेहनत भी नहीं करनी पड़ेगी। बस शाम को रेडियो मास्को और रेडियो पीकिंग लगाओ जो कुछ बात वहाँ से आयें लिखते रहो और दूसरे दिन अपने अखबार लालझंडी में छाप कर निकलो। शुरू-शुरू में अपना अखबार हमें खुद बेचना पड़ेगा। देश में क्रांति लाने के लिये सख्त मेहनत करनी पड़ती है। मेवा बहुत संघर्ष के बाद मिलता है। जै बोलो सिया राम शरण की।


साहेबान, आज की ताजा खबर पढ़िये । मजदूरों के साथ अन्याय । एक यूनियन लीडर की चाय में मक्खी गिर गयी । पूंजीवादियों की साजिश...... पढ़िये...पढ़िये ।
समाजवादी नेता का चैलेंज...बैल पूंजीपतियों का गुर्गा है जभी तो वह लाल कपड़ा देखकर भड़क उठता है...लाल मिर्चों में विटामिन सी पायी गयी......कर्मचारियों को बोनस दो.....
अोये लाल झंडी वाले कबूतर । तुम दोनों अपने यह अखबार-वखबार यहां से उठा लो वर्ना मैं ही उठा कर फेंक दूंगा । तुम्हें यहां गला फाड़ने की इजाजत किसने दी ?
पूंजीवादियों का एजेन्ट ।
तू होता कौन है हमें यहां से हटाने वाला ?
मैं सी. आई. ए. एजेन्ट हूं । तुम्हें यहां से चलता करके ही दम लूंगा ।
GRRRR
तू ही है सी. आई. ए. ऐजेंट । पूंजीवादियों ने कितने अपने जाल फैला रखे हैं । कदम-कदम पर सी. आई. ए. वालों का जाल है । हमने लालझंडी क्रांतिकारी अखबार निकाला नहीं और पीछे पड़ गये ।
तू सी. आई. ए. एजेन्ट है तो क्या हुआ ? मैं भी लाल झंडी वाला सिपाही हूं, तेरी काली झंडी उखाड़ कर ही दम लूंगा ।
जा जा ! बड़ा आया झंडी उखाड़ने वाला । तुझे ठंडी सड़क पर ले जाकर डंडी से चंडी मन्दिर के सामने बंडी पहना दूंगा । देखते-देखते तबीयत ऐसी ठंडी कर दूंगा कि पीठ पर अरंडी के तेल की मालिश करनी पड़ेगी ।




**पिलपिल-सिलबिल के नये कारनामे अगले अंक में पढिये ।**

# खेल खेल में

**प्रभात कुमार अग्रवाल—नरेनी**

**प्र०** : डबल विकेट क्रिकेट कैसे खेला जाता है? इसमें हार जीत का फैसला कैसे होता है ?

उ० : डबल विकेट क्रिकेट की अपनी विशेषतायें होती हैं। दो-दो खिलाड़ियों की जोड़ियाँ अमंत्रित की जाती हैं उन दो खिलाड़ियों में से एक बल्लेबाज होगा तथा दूसरा मुख्यतः बालर जो आलराउंडर भी हो सकता है। जैसे भारत की ओर से सुनील गावस्कर तथा बिशन बेदी की जोड़ी गयी थी।

डबल विकेट क्रिकेट में सीमारेखा केवल ४० गज़ दूर रखी जाती है। सीमा रेखा के साथ ऊँची जाली लगी होती है। ताकि गेंद बैट्समैन के बल्ले से लगकर ऊँची भी आये तो दर्शकों को न लगे। जाली रोक लेती है। गेंद जाली के तले में लगे तो एक रन माना जाता है और उससे काफी ऊपर तो दो रन। अगर गेंद सीधे आकर जाली से टकरा कर वापिस पीछे उछलने पर जमीन से लगने से पहले पकड़ लिया जाए तो बैट्समैन कैच आऊट माना जाता है।

प्रायः एक टूर्नामेंट में छः जोड़ियां आमंत्रित की जाती हैं। एक जोड़ी तो बैटिंग करेगी, बाकी पाँच जोड़ियों के दस खिलाड़ी फील्डिंग करते हैं। बैटिंग करने वाली जोड़ी दस ओवरों का सामना करती है। फील्डिंग करने वाले दसों खिलाड़ी एक-एक ओवर फेंकते हैं। विकेट कीपर टूर्नामेन्ट के आयोजकों की ओर से नियुक्त किया जाता है अर्थात् सब के लिए वही विकेटकीपिंग करेगा। वह निष्पक्ष होगा।

अब इस मैच में अंकों की गणना भी अपने ही अलग ढंग की होती है। कोई बैट्समैन आऊट हो जाये तो वह पैविलियन नहीं लौटता, खेलता रहता है। एक जोड़ी के दोनों खिलाड़ी कुल मिलाकर दस बार आऊट होने तक खेलते ही रहते हैं। दस ओवरों में दस बार आऊट तो बहुत कम बार होता है हाँ, आऊट होने की पैनल्टी भरनी पड़ती है। एक बार आऊट होने के पच्चीस रन कुल रन संख्या में से कट जाते हैं। जैसे एक जोड़ी के बल्ले बाज दस ओवरों में चार बार आऊट हुए तो उन्होंने कुल जितने रन बनाये हैं उन में से (४×२५) सौ रन काट दिए जायेंगे। प्रायः इस खेल में जोड़ियाँ ऋण रन बनाती हैं यानि उन्होंने जितने रन बनाए उससे काटे जाने वाले रन अधिक बनते हैं। इस दशा में उन्हें ऋण अंक यानि माइनस पाइंट मिलते हैं। उदाहरण के लिए सुनील गावस्कर तथा बिशन बेदी की जोड़ी ने दस ओवरों में ८६ रन बनाए लेकिन दोनों कुल ६ बार (बेदी चार बार व गावस्कार दो बार) आऊट हुए। अब दोनों को २५×६=डेढ़ सौ पैनाल्टी अंक या रन मिले। अन्तिम अंकों की गणना इस प्रकार होगी ८६—१५०=—६४ अर्थात इन्हें माइनस ६४ अंक प्राप्त हुए।

अप्रैल में इंगलैंड में हुए डबल विकेट टूर्नामैंट में पाकिस्तान की ओर से जहीर अब्बास तथा आसिफ इकबाल, न्यूजीलैंड की ओर से रिचर्ड हैडली तथा ज्यॉफ हावर्थ, वेस्टइंडीज की ओर से कालीचरण तथा होल्डर आस्ट्रेलिया की ओर से टूही तथा हॉग, इंगलैंड की ओर से रैन्डाल व बॉयम तथा भारत की ओर से बेदी व गावस्कर खेले थे।

भारत, वेस्टइंडीज, आस्ट्रेलिया तथा पाकिस्तान की जोड़ियाँ घाटे में रहीं यानि उन्होंने माइनस अंक ही प्राप्त किये। केवल न्यूजीलेंड १७ धन अंक बना सका। न्यूजीलेंड की जोड़ी ने ६७ रन बनाये और वे दो बार आऊट हुए। पचास अंक पैनल्टी के कटने पर १७ रन बचे! आखिरी जोड़ी इंगलैंड की खेली। उन्हें यह टूर्नामेंट जीतने के लिए केवल १८ रन बनाने पड़े जो उन्होंने बना लिए। अगर सारी जोड़ियाँ ऋण अंक बनातीं तो उस जोड़ी को विजेता माना जाता जिसे सबसे कम ऋण अंक मिले हों। इस टूर्नामैंट में जोड़ियों की स्थिति इस प्रकार रही।

१. इंगलैंड—विजेता
२. न्यूजीलैंड=+१७
३. पाकिस्तान=—३६
४. आस्ट्रेलिया=—४४
५. भारत=—६४
६. वेस्टइंडीज=—१३३

**सन्त लाल कपूर—पानीपत**

**प्र०** : कबड्डी में भारत ने कुल कितने स्वर्ण-पदक जीते हैं ?

उ० : अभी कबड्डी अन्तर्राष्ट्रीय खेल जगत में मान्य खेल के रूप में प्रचलित नहीं हुआ है, अतः स्वर्ण पदक जीतने का प्रश्न ही नहीं उठता।

**मामराज अग्रवाल—बिहार**

**प्र०** : भारत में हाकी स्तर क्यों गिरता जा रहा है? क्या इसका कारण हाकी अधिकारियों पर कोई राजनैतिक दबाव का पड़ना है?

उ० : हाकी अधिकारी खुद ही राजनीति के दलदल में धंसे हुए हैं।

**चन्द्र शेखर गोवस्वामी—हरिद्वार**

**प्र०** : क्या विश्व कप क्रिकेट में खिलाड़ियों द्वारा बनाए गए रन भी खिलाड़ियों की निजी रन संख्या में जोड़े जायेंगे ?

**उ०** : ये रन टैस्ट रनों की संख्[या में] नहीं गिने जाते। प्रथम श्रेणी मैचों के में इनकी गिनती होती है।

**सुनील कुमार धाकड़—गोहरगंज (भो**

**प्र०** : आप कृपया वेस्टइंडीज श्रृंखला के खिलाड़ी रिकार्ड दें ?

**उ०** : हम पहले ही दे चुके हैं।

**सन्त लाल कपूर—पानीपत**

**प्र०** : घावरी और कपिलदेव में अच्छा आलराऊंडर कौन है।

**उ०** : कपिलदेव

**छवि कुमार—मुलुंड, बम्बई**

सबसे ज्यादा समय तक क्रिके[ट] मैदान में जमे रह कर अपना जौहर [दिखाने] का कीर्तिमान किसका है।

उ० : पाकिस्तान के हनीफ मु[हम्मद] का! ९७३ मिनट एक पारी में।

**केवल प्रकाश दुआ—काशीपुर**

**प्र०** : एशिया में ओलम्पिक खेल नहीं होते।

उ० : ओलम्पिक खेलों का आय[ोजन] इतना खर्चीला है कि एशिया के गरीब वहन नहीं कर सकते।

**सुनील कुमार—पहासू (बुलन्दशहर)**

**प्र०** : भारतीय क्रिकेट टीम इंगलै[ंड] दौरे के पश्चात किस देश के साथ टैस्ट खेलेगी और वह मैच कब और खेलेगी।

**उ०** : सितम्बर के अन्त में आस्ट्रेलि[या] टीम भारत आएगी और सर्दियों पाक टीम के आने की उम्मीद है।

**अनुराग कस्तवार—कृष्ण गंज, वार्ड सा**

**प्र०** : हाल में इंगलैंड के दौरे पर वाली टीम का कप्तान वेंकट राघवन को क्यों चुना गया ?

**उ०** : यह सवाल तो हर किसी के में किया जा सकता है। किसी को कप्तान बनाने पर कहा जा सकता है इसी को कप्तान क्यों चुना गया! के सारे खिलाड़ियों को तो कप्तान बन नहीं जा सकता। वेंकटराघवन में योग्यतायें पायी गयीं जैसे अनुभव, फ में होना, इंगलैंड में खेलने का अनुभव त सिनियरटी।

**खेल-खेल में**
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

# बन्द करो बकवास


सुनो छोटी सी गुड़िया की लम्बी कहानी…
बन्द करो बकवास, मैंने लम्बी सी कहानी नहीं छोटी सी कहानी सुननी है।
रेलगाड़ी रेलगाड़ी छुक-छुक-छुक, बीच वाले स्टेशन बोले रुक-रुक-रुक।
RETIRING ROOM
बन्द करो बकवास, यह लाल झंडी तुम्हें इसीलिए दी है कि तुम इसे दिखाकर गाड़ी रोक सको।
ऊपर वाला जानकर अन्जान है, अपनी तो हर आह इक तूफान है!
बन्द करो बकवास और रिक्शा चलाओ, मुझे देर हो रही है।

# तर्क-कुतर्क

**गिरीश कुमार—खंडवा**

**तर्क**—आनन्द आ रहा है।

**कुतर्क**—कहाँ से ?

**तर्क**—मैं तो आरती उतारूं रे·····

**कुतर्क**—कौन सी मंजिल पर से ?

**तर्क**—आपकी घड़ी में क्या बज रहा है ?

**कुतर्क**—कोई कंकर होगा।

**योगेश कुमार—डीमापुर**

**तर्क**—तुम्हारा घर कहां पर है ?

**कुतर्क**—जमीन पर ही है भाई।

**तर्क**—इस बार मैं भी चुनाव लड़ूंगा ?

**कुतर्क**—लड़ाई-झगड़े मत करो भाई कहीं चोट लग जायेगी।

**तर्क**—शराब पूर्ण रूप से बंद होनी चाहिये।

**कुतर्क**—कहीं गैस निकल न जाये।

**तर्क**—उसका भंडा फूट गया।

**कुतर्क**—संभाल कर नहीं रखा होगा।

**तर्क**—तुम्हारी जुल्फें उड़ रही हैं।

**कुतर्क**—हाइड्रोजन गैस लगा ली होगी सिर में।

**सुरिन्द्र सिंह—मनीपुर**

**तर्क**—मेरे डैडी ने मेरा नाम बबलू रखा है।

**कुतर्क**—कहां रखा है, आलमारी में !

**राजेन्द्र सिंह तनुजा—आरिपा**

**तर्क**—अरे यार बिल्ली रास्ता काट गई।

**कुतर्क**—कैंची से या ब्लेड से ?

**रामचन्द्र डेम्बरा—खंडवा**

**तर्क**—"क्यों अकेले-अकेले कचौड़ी खा रहे हो।"

**कुतर्क**—"नहीं जी, चटनी के साथ खा रहा हूँ।"

**आलोक गुप्ता**

**तर्क**—मुझे यह बात बुरी तरह लग गई।

**कुतर्क**—तो जल्दी निकाल कर फेंक दो नहीं तो चिपक जायेगी।

**ओम प्रकाश सहगल—फरीदाबाद**

**तर्क**—आपने मुझे पहचाना ?

**कुतर्क**—जी हां ! याद आया, उस दिन धोबी जिस पर कपड़े लाद कर ले जा रहा था आप ही थे न।

**तर्क**—मेरा दिल जल रहा है।

**कुतर्क**—फायरब्रिगेड बुलावा लो।

**तर्क**—भगवान से क्या मांगू ?

**कुतर्क**—मांग लो दो चार तन्दूरी मुर्गे।

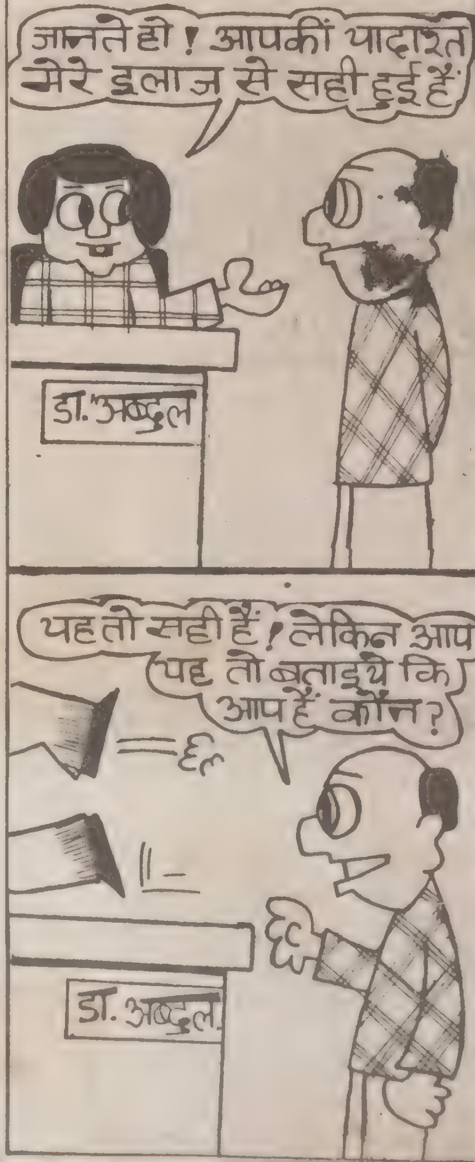
"तर्क कुतर्क
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

# अनमोल लतीफे

● एक शादियां करवाने वाला दलाल वर को होने वाली दुल्हन का घर दिखा रहा था क्योंकि वर पहले खुद देखकर अपने भावी ससुराल वालों की आर्थिक स्थिति का अन्दाजा लगाना चाहता था। घर दिखाते हुए दलाल बोला, 'आप पुराने मकान और उखड़ी दीवारों से अन्दाजा मत लगाइये। ये लोग छुपे रुस्तम हैं। मोटी आसामी हैं। फर्नीचर देखिए कितना शानदार है। वह इम्पोर्टिड टीवी, फ्रिज, और आलमारी में सजी कीमती क्राकरी देखिए। चांदी के बर्तन देखिए ! दीवारों पर महंगी पेंटिंग लटक रही है।'

वर बोला, 'यह भी हो सकता है कि ये सब सामान मुझ पर रौब डालने के लिए पड़ोसियों से उधार लिया गया हो।'

दलाल ने ठहाका लगाया, 'उधार ?' साहब आप क्या बात करते हैं !' और अचानक उसके मुंह से निकल गया, 'इन भिखमंगों को कौन उधार देगा ?'




● दो मित्रों में बातें हो रही थीं।

एक—'यार कल ऐसा सपना आया मजा आ गया। मैंने सर्कस देखा ! हाथी योगाभ्यास कर रहा था, शेर स्टूल पर चढ़ कर भाषण दे रहा था, घोड़ा एक किताब पढ़ रहा था और ऐसे करतब अब भी याद आते हैं तो हैरानी होती है।'

दूसरा—'कल सपना मैंने भी मजेदार देखा। क्या देखता हूं कि कोई दरवाजा खट-खटा रहा है। खोला तो जीनत अमान खड़ी है। अन्दर आकर मेरे पास बैठी और मीठी मीठी बातें करने लगी। कहने लगी तुमसे शादी करना चाहती हूं। इतने में और किसी ने दरवाजा खटखटाया ! देखा तो हेमा मालिनी खड़ी है। मुझसे पूछकर अन्दर आई और मेरी दूसरी बगल में बैठ। दोनों मुझसे शादी की ज़िद् करने लगीं ! मैं पेशोपेश में कि किसे ठुकराऊं किसे अपनाऊं···।'

पहला—'अरे, जीनत अमान और हेमा मालिनी दोनों आई थीं ? मुझे फोन करके बुलाया होता ! एक से मैं शादी कर लेता।'

दूसरा—'फोन तो किया था यार। वहां पता लगा कि तू तो सर्कस देखने गया है।'

● जंगल में शेर एक दिन मौज में आया हुआ था और घूम रहा था। उसे बाघ मिला। शेर ने गर्ज कर पूछा, 'बताओ जंगल का राजा कौन है ?'

'आप ही जंगल के स्वामी हैं महाराज।' बाघ ने उत्तर दिया। कुछ आगे जाने पर शेर की मुलाकात चीते से हुई। शेर ने उससे भी वही सवाल पूछा। चीते ने आदर से धरती पर लेट कर कहा, 'हुजूर आपके सिवा जंगल का राजा बनने की किस में मजाल है ?'

शेर का सीना और ज्यादा फूल गया। आगे उसे एक विशालकाय हाथी मिला। शेर ने भयानक गर्जना करके पूछा, 'जंगल का राजा कौन है ?'

हाथी ने सूंड से शेर को उठाकर हवा में घुमाया और नीचे पटक दिया और उसका एक पैर अपने पैर से दबाकर तोड़ दिया। शेर ने कराहते हुए कहा, 'यार, तुम्हें मेरी बात का जवाब नहीं आता था तो उसमें इतना गुस्सा होने की क्या बात थी ?'

● 'क्या चिकनी मिट्टी के लेप से सुन्दरता में निखार आता है ?' एक मित्र ने पूछा।

दूसरा मित्र, 'हां ! मेरी बीबी पिछले हफ्ते ब्यूटी पार्लर गयी थी जहां चिकनी मिट्टी के लेप से रंग निखारा जाता है। तीन-चार दिन वह बहुत सुन्दर लगती रही ! फिर मिट्टी उखड़ गयी और वह पहले जैसी हो गयी




# सोचिये

## ५ रुपये जीतिये

### कापर सल्फेट

प्रसिद्ध रसायन वैज्ञानिक डकलॉक्स का चहेता शिष्य रुक्स था। शुरू में एक दिन डकलॉक्स ने रुक्स को एक पाउडर दिया और कहा कि जांच करके बताओ यह क्या है ? रुक्स टेस्ट करके आया, 'सर मेरा ख्याल है यह कॉपर सल्फेट है।'

डकलॉक्स ने दोबारा टेस्ट करने के लिये कहा।

रुक्स ने टेस्ट करने के बाद फिर कहा, 'सर, मेरे ख्याल में यह कॉपर सल्फेट ही है।' उसे फिर टेस्ट करने का आदेश मिला।

इस बार रुक्स टेस्ट कर आया तो जरा तीखी आवाज में खीज कर बोला, 'सर, यह कॉपर सल्फेट ही है।' डकलॉक्स मुस्कराये, 'दोस्त, ठीक है। यह कॉपर सल्फेट ही है।'

सारांश :—

अन्तिम तिथि ११.८.७९

दीवाना साप्ताहिक ८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली-११००८

## आहा हा!

● एक डांसर दूसरी से, 'तुम कैबरे डांसर क्यों बनीं ?'

दूसरी, 'घर में गरीबी का नंगा नाच हो रहा था।'

● जंगल के गार्ड ने एक शिकारी को बेमौसम शिकार करते पकड़ लिया। गार्ड ने लताड़ा, 'आपको पता नहीं है कि इस मौसम में शिकार करने की कानूनी मनाही है।'

शिकारी, 'पता है भई। लेकिन जब शिकार का मौसम होता है तो एक भी हिरण नजर नहीं आता। जब हिरण नियमों का पालन नहीं करते तो मैं ही क्यों करूं ?'

● एक नेता भाषण दे रहे थे 'भाइयों, आज विज्ञान ने कितनी तरक्की की है। रेल, हवाई जहाज और मोटरों ने दुनिया की सभी जगह नजदीक ला दिये हैं। दुनिया छोटी होती जा रही है...।'

तभी एक ग्रामीण ने खड़े होकर पूछा, 'तो फिर आप लोग हर साल बजट में डाक की दरें बढ़ाते क्यों जा रहे हैं ?'

# कविताएँ

## प्रगति

**बाबूलाल कदम**

परिवार नियोजन के
प्रचार में
वे इतने खो गये
कि, कुछ वर्षो में
उनके ही
दर्जन-भर बच्चे हो गये !

## सलाह

अभिनेता
फिल्मों में खतरे का काम
खुद नहीं करते
'दूसरे' से करवाते हैं
इसे अमल में लाएं
जिस सभा में
पत्थरबाजी का डर हो
नेता अपने
'डुप्लीकेट' को भिजवाएँ !

## चिन्ता

सम्पादक को
व्याहकर बेटी
वापसी के डर से
चिन्तित ही रहा पिता
क्योंकि—
उसकी बेटी का
नाम था 'कविता'।

## प्रेक्टीकल

**प्रकाश नेमा 'प्रलय'**

कक्षा में गुरुजी
आराम से सोते
लड़के उनके
नाम से रोते
जब वो एक दिन
सो रहे थे आदतन
तभी मौके पर पहुंचे
बड़े सा० श्रीरामधन
बच्चे नमस्ते नमस्ते
करने लगे
गुरुजी धीरे-धीरे
जगने लगे
बड़े सा० ने सोचा,
बहुत दिनों से
ढूंढ रहा था
नब्बे प्रतिशत
फैल होने का कारण,
जिसका सही
आज हुआ निवारण।
शायद सभी स्कूलों में
ऐसा ही है होता,
तभी उन्हें सुनाई पड़ा—
गुरुजी कह रहे थे—
हां तो बच्चों समझ गये,
कुम्भकरण किस
तरह से था सोता…।
बड़े सा० उन्हें गये जान
और यह गये मान
कि
हमारा शिक्षक
जो कुछ पढ़ाता है
प्रेक्टीकल करके
दिखाता है।

## बाल वर्ष

**राजेन्द्र चंचल धामपुरी**

बाल वर्ष
उनके लिए
अजूबा है
क्योंकि
उनका बाल बाल
कर्ज में—
डूबा है।

## हमारी तरह

वो बोले—
आप भी
आगे बढ़िए
हमारी तरह
एकता के लिए
आपस में लड़िए।

## भाव

कवि से
बोला आलोचक
'भावों पर
ध्यान दो'
कवि ने कहा है—
'यह काम
मेरा नहीं
सरकार का है'

## बाल की खाल

वो
विरोधियों की
बाल की खाल
निकाले जा रहे हैं
और इस प्रकार
बाल वर्ष—
मना रहे हैं।

## काम की चीज

**कवि हुक्का**

पति
जब बाजार से
सस्ते दामों पर
ले आया एक तिपाई
तो उनकी पत्नी
उन पर झल्लाई
गुस्से में
तिपाई को
दिवार पर मारकर
कर दिया उसका सफाया
और बोली—
पता नहीं कैसा
पल्ले पड़ गया दो पाया।
मैं पूछती हू
कि आज तक कभी
जिन्दगी में
घर के अन्दर
कोई काम की
चीज लाये हो।
इस पर
अत्यन्त धीमे स्वर में
पति बोला—
भागवान।
काम की चीज
न लाने के कारण
मैं जिन्दगी में
हमेशा पछताया हू।
उदाहरण के लिए देखो
इस घर में
शादी करके भी
तुम को लाया हूं।


बिजली चमकती है तो याद आती है उन फिल्म स्टारों
की जो एक फिल्म में आते हैं और उसके बाद गायब
हो जाते हैं।
बादल गरजते हैं तो याद आती है बॉस की
दफ्तर में इसी तरह गरजता है।
याद आई बरसात में उनकी
जब टप-टप पानी गिरता है तो याद आती है हमारे
टिप टिप
टिप
जब पानी में पैर फिसलकर पानी में गले तक डूब जाते
हैं तो याद आती है अपनी आर्थिक दशा की. गले तक
कर्ज में डूबे हैं !
पानी निकासी के पाइप से पानी की धार देख याद आता
है बीबी का रोना।
सड़क पर जाती कार जब कीचड़ फेंक जाती है तो
याद आती है जनता पार्टी के नेताओं की जो हर समय
एक-दूसरे पर कीचड़ उछालते रहते हैं।




**योगेश कुमार अग्रवाल—डोमापुर**

**प्र०** : अपनी 'गर्ल फ्रैन्ड' से हमें नहीं मिलायेंगे क्या ?

**उ०** : मेरी गर्लफ्रैंड का प्यार का नाम व्हिस्की है। आप अपना नाम बदल कर सोडाकुमार रख दीजिये तो मिलवा दूंगा !

**प्र०** : आपके पूर्वज भी चूहे ही थे या और कुछ ?

**उ०** : कुछ भी रहे हों लेकिन बन्दर नहीं थे।

**एम. एस. गुजराल—करनाल**

**प्र०** : गरीब चन्द जी आप कौन से बिल में रहते हैं और आपके साथ कौन रहता है। आपके बिल का क्या नम्बर है ?

**उ०** : मैं अकेला ही रहता हूं। मैंने बिल पर नम्बर नहीं लगा रखा है, इस डर से कि कहीं दिल्ली कार्पोरेशन के चूहे हाऊस टैक्स वसूलने न आ जायें।

**आलोक गुप्ता—कानपुर**

**प्र०** : अगर पत्नी से ज्यादा खूबसूरत साली हो तो ?

**उ०** : तो ससुराल में डेरे जमा लो।

**राजेन्द्र सिंह तलुजा—झरिया**

**प्र०** : मेरा मन पढ़ने को करता है। पर जब पढ़ने बैठता हूं तो पढ़ नहीं पाता हूं, क्या करूं ?

**उ०** : आप खड़े-खड़े पढ़ने की कोशिश करें।

**मुन्ना बाबू विद्यार्थी—कानपुर**

**प्र०** : गरीब चन्द जी मैं अपनी फोटो दीवाना साप्ताहिक में छपवाना चाहता हूं तो क्या आप मिलबिल-पिलपिल से कहकर उसे जल्दी छपवाने का कष्ट करेंगे क्योंकि वे दीवाना कार्यालय में आजकल बहुत रौब जमाये हुए हैं ?

**उ०** : मिलबिल-पिलपिल से तो कहना ही बेकार है। उनके हाथ आपका फोटो आ गया तो वह अपनी भैंस को खिला देंगे।

**अभिमन्यु मिश्रा** :

**प्र०** : दीवाना पढ़कर हमें बहुत आनन्द आया, कृपा करके आप ये बता दीजिए कि मैं हफ्ते में दीवाना ठीक समय पर डाक द्वारा कैसे प्राप्त कर सकता हूं ?

**उ०** : आप डाकखाने में पोस्टमैन लग जाइये और अपने दीवाने को ठीक समय पर अपने घर डाल दीजिये।

**अशोक जौहर 'गगन'—देहरादून :**

**प्र०** : मुझे रेडियो सुनने का बहुत शौक है। मगर आपकी बिरादरी वालों ने रेडियो का क्रियाकर्म करके रख दिया है। अब क्या करूं ?

**उ०** : आप रेडियो पर गाने सुनने होंगे। मंत्रियों के भाषण वाले प्रोग्राम भी लगाइये। आपके रेडियो सैट में क्या मकान से ही मेरी बिरादरी वाले बोर होकर भाग जायेंगे।

**खान निगार वारसी—शाहजहांपुर** :

**प्र०** : गरीब चन्दजी आप कौन सा पेस्ट इस्तेमाल करते हैं ?

**उ०** : मेरा काम लोगों की जड़ें कुतरना है। अतः पेस्ट भी मुझे जड़ी-बूटी वाला पसन्द है।

**प्र०** : गरीब चन्द जी, मैं प्रेमजाल में फंस गया हूं, आप मेरी सहायता करेंगे ?

**उ०** : प्रेमजाल में फंसने वालों की सहायता आगरा वाले करते हैं, वहां पागलखाना है।

**अनिलकुमार मधुकर—जवाहर नगर :**

**प्र०** : दिल एक मन्दिर है तो इस मन्दिर का पुजारी कौन है ?

**उ०** : इस मन्दिर में जूतों से पूजा होती है। जिसके हाथ में जूता होता है वही पुजारी माना जाता है।

**सतिन्द्र सिंह साहनी—बरेली** :

**प्र०** : गरीब चन्दजी आपका यह नाम कैसे पड़ा ?

**उ०** : बहुत बुरा पड़ा।

**जय भगवान पान वाला—जयपुर** : गरीब चन्द जी आप आखिर कब तक गरीब रहेंगे।

**उ०** : मैं तो सदा गरीब ही रहना चाहता था लेकिन मोरार जी भाई जबरदस्ती मुझे डंडा मार कर दस साल में अमीर बनाने के लिए पीछे पड़ गये हैं।

**संजय साहनी—जबलपुर** : गरीब चन्द जी जब पिता जी बिना कारण पिटायी करें तो क्या करना चाहिए।

**उ०** : आप बिना कारण हंसना शुरू कर दीजिए।

**ईशु भगत—राजापार्क, जयपुर** : "देखा है, कुत्ते की पूंछ कितनी ही सीधी करो वह टेढ़ी ही हो जाती है, पर आपकी इस खड़ी पूंछ का रहस्य क्या है ?"

**उ०** : कुत्ता दूसरों की खाट खड़ी कर देता है, हम अपनी पूंछ ही खड़ी कर पाते हैं।

**गरीबचन्द की डाक**
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

# नुक्कम तुक्का
मकाबला

## पुरस्कार पुरस्क

हम इस प्रतियोगिता में हर सप्ताह एक नेत को लेंगे। आपको उस नेता के नाम के अक्षरों से क्रमवार एक व्यंग्य कविता लिखनी होगी जो उसके कारनामों पर फिट बैठे। उदाहरण के तौर पर हमने राजनारायन जी पर कविता लिखी है। उसी प्रकार आप नीचे लिखे नाम पर कविता लिख भेजिए। नाम के सारे अक्षरों से क्रमवार कविता की लाइनें बनानी चाहिये।

**सर्वश्रेष्ठ कविता को पुरस्कार**

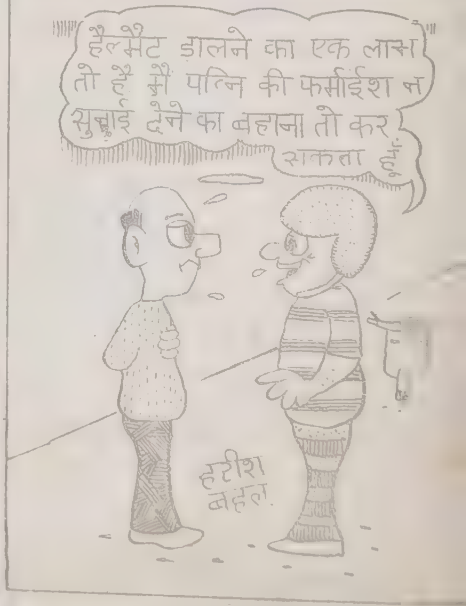
राायबरेली के बैसाखी नंद हैं ये,
जनता पार्टी की दाल भात में मूसरचंद हैं ये
नाना बयान रोज अखबारों को देते हैं,
राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की खबर लेते हैं
यह साहब जिसके पक्ष में खड़े होते हैं,
नादानी से उसी की लुटिया डुबोते हैं।

**बिजू पटनायक**

दीवाना के कार्यालय में हल पहुंचने की अन्तिम तिथि ११-८-१९७९

उत्तर केवल पोस्ट कार्ड पर ही भेजें।

**नुक्कम तुक्का**
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२



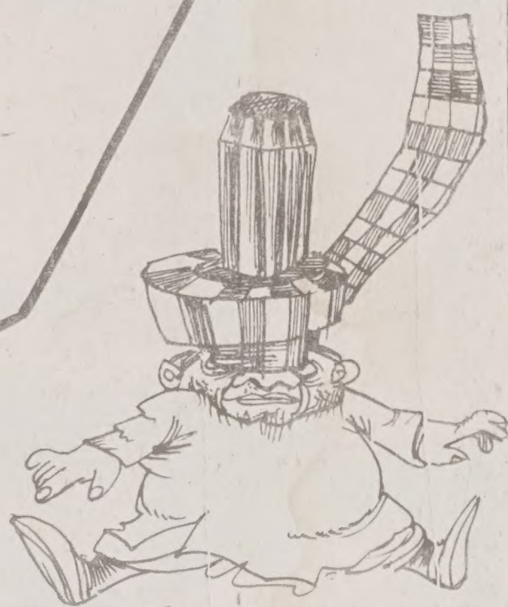
# स्काईलैब अगर...

स्काईलैब के गिरने को लेकर बेकार ही हाय तौबा मचाया गया। नुकसान को लेकर कुछ चीख पुकार की गयी। किसी का ध्यान इस ओर नहीं गया कि स्काईलैब भारत में गिरता तो फायदा भी हो सकता था। हमारे विचार में तो फायदा ज्यादा होते जैसे ....




हो सकता था स्काईलैब इन्कम टैक्स वालों के दफ्तर पर आ गिरता। जनता कितनी खुश होती, खून चूसने वाले खटमलों का सफाया हो जाता।



हो सकता था स्काईलैब किसी नेता के सिर पर आ गिरता और देश को एक मुसीबत से छुटकारा मिलता (सीधे पार्लियामेंट पर आ गिरता तो एक ही बार में सबकी छुट्टी हो जाती और सारा देश सुख की सांस लेता)।

हो सकता था स्काईलैब उस दुकान पर आ गिरता जहां से आप साल भर उधार खाते रहे थे, सारा हिसाब ही साफ हो जाता।



हो सकता था आप प्रेमिका के साथ पार्क में बैठे होते और स्काईलैब प्रेमिका के घर पर गिरता। फिर प्रेमिका को आपके घर ही शरण लेनी पड़ती।



हो सकता था टेस्ट मैच में हमारे बॉलर बैट्स मैन को आऊट न कर पा रहे होते और एक डिलीवरी के साथ-साथ स्काईलैब का टुकड़ा आकर गिल्लियां उड़ा देता और बैट्स मैन आऊट कर दिया जाता।



सवाल यह है?
हालात आजकल चल रहे है उसके अनुसार आने वाले
नों में हमारा केन्द्रीय मंत्री मडल कैसा होगा ?
विदेश मंत्री
विदेशों में ही रहो। अपने देश में तुम्हारा क्या काम।
वित्त मंत्री
में एक
भी नहीं।
शिक्षा मंत्री
प्रौढ़ शिक्षा का आखरी विद्यार्थी।
EFG HIJK LMNO PQRST
तेल देखो तेल की धार देखो मंत्री
जिस मिट्टी का तेल मिट्टीमें मिला रहा है।
सूचना और ढिंढोर्ची मंत्री
चाचा गालिब का एक शेर सुनिये महरबान।
बक रहा हू जनू में क्या-क्या कुछ
कुछ ना समझे खुदा करे कोई।
खोलो
बाहर निकलो
अपना गिरेबान
हमारे हाथ मे दो।
गृह मंत्री
अपने घर की शोभा बने हुए है।
कानून मंत्री
मुझ से पूछो, किस कानून का क्या मतलब है।




 एक और लाजवाब सवाल के लिए आगामी अंक की प्रतीक्षा कीजिये।